RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 27 मई 2019/ पोस्टिंग तिथि 31 मई

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका जून 2019

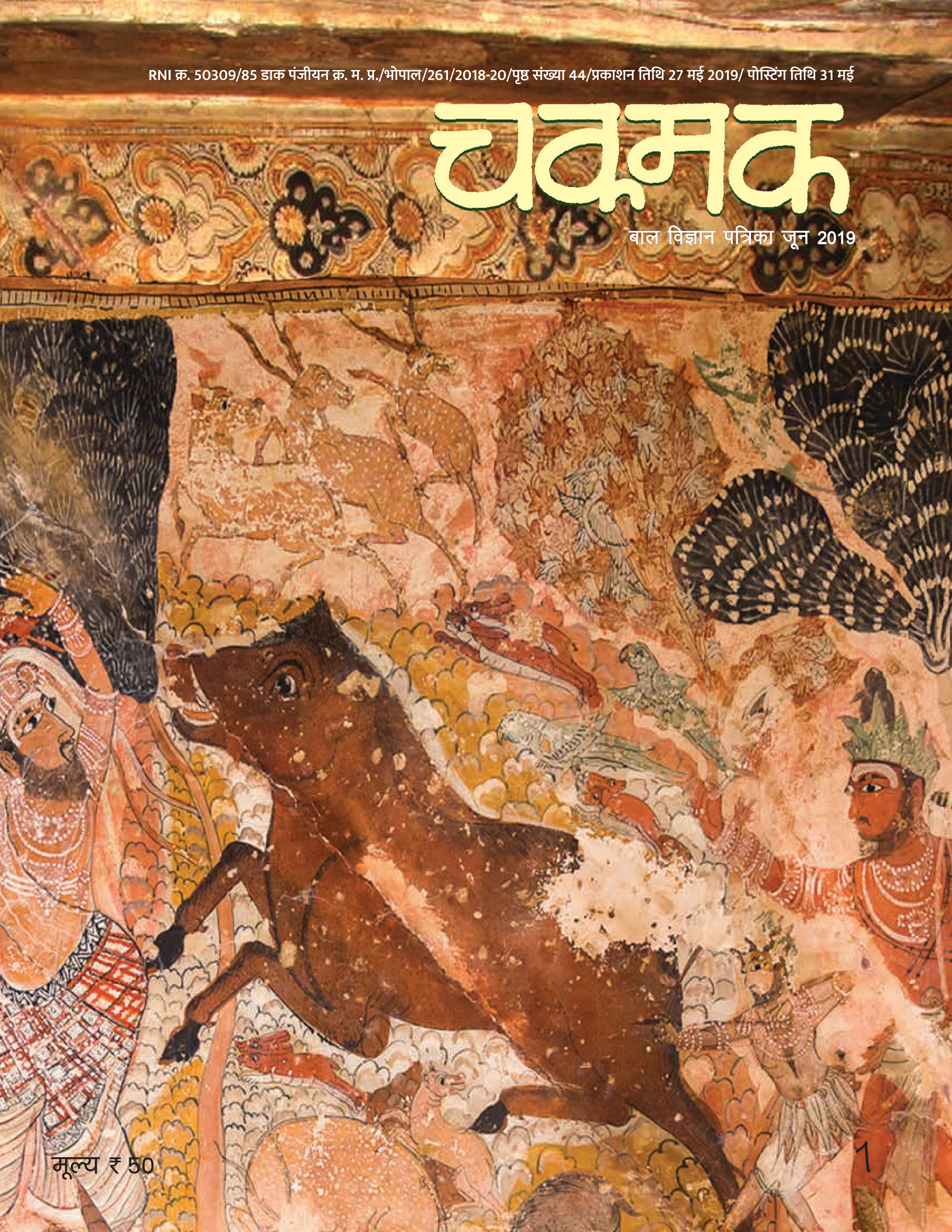

मूल्य ₹ 50

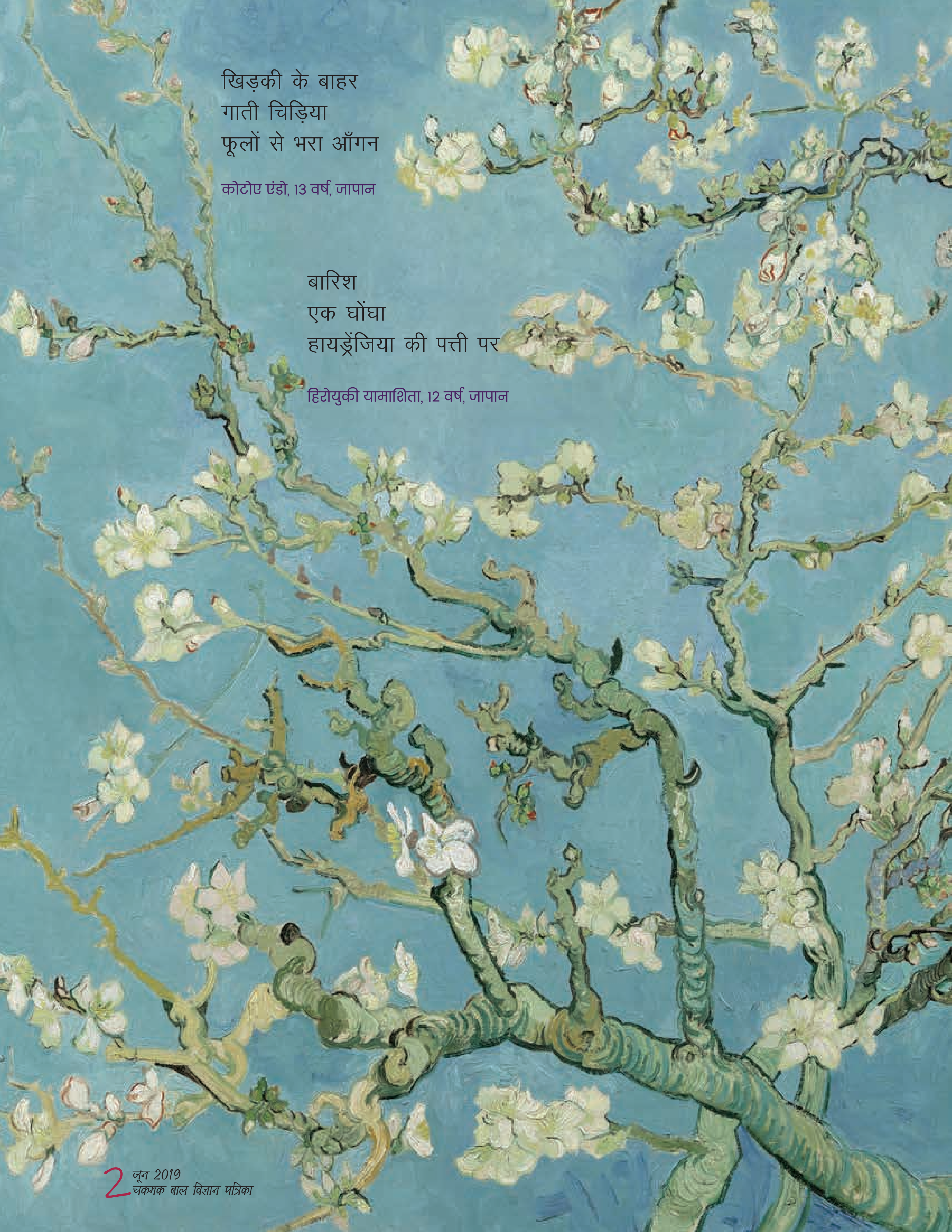

खिड़की के बाहर
गाती चिड़िया
फूलों से भरा आँगन

कोटोए एंडो, 13 वर्ष, जापान

बारिश
एक घोंघा
हायड्रेंजिया की पत्ती पर

हिरोयुकी यामाशिता, 12 वर्ष, जापान

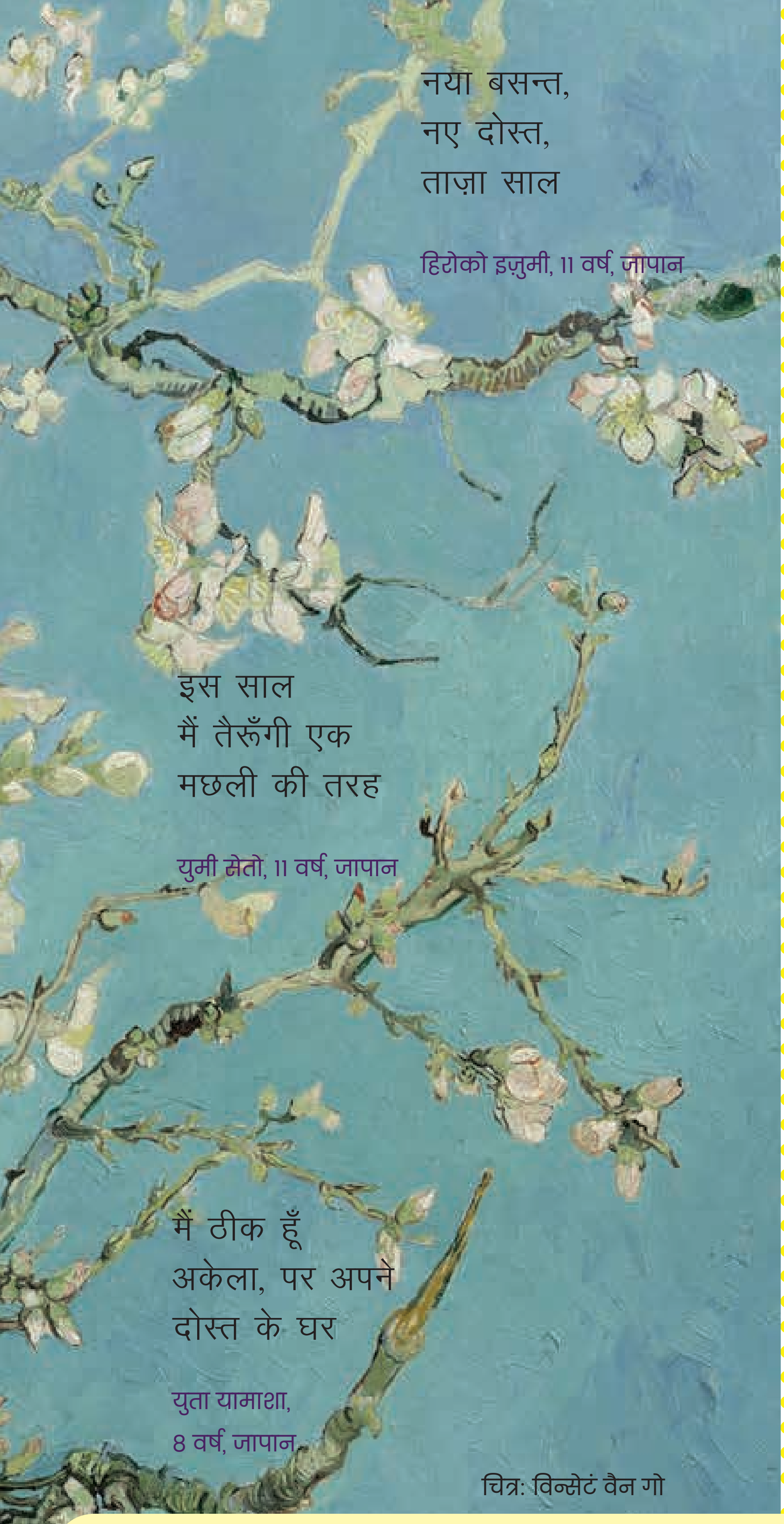

नया बसन्त,
नए दोस्त,
ताज़ा साल

हिरोको इज़ुमी, 11 वर्ष, जापान

इस साल
मैं तैरूँगी एक
मछली की तरह

युमी सेतो, 11 वर्ष, जापान

मैं ठीक हूँ
अकेला, पर अपने
दोस्त के घर

युता यामाशा,
8 वर्ष, जापान

चित्र: विन्सेंट वैन गो

अंक 393 जून 2019

चकमक

इस बार 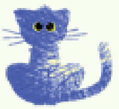

हाइकू	2
गप्प सुनो अब गप्प - रावेन्द्रकुमार रवि	4
जंगली सूअर का शिकार - सी एन सुब्रह्मण्यम्	5
किट्टू उड़नछू! - हर्षिका उदासी	8
मनुष्य कितना तापमान झेल सकते हैं - सुशील जोशी	12
दो मोची, एक ग्राहक... - रुद्राशीष चक्रवर्ती	14
क्यों, क्यों?	15
तुम भी जानो	17
जब परछाई भी तुम्हारा साथ न दे - संजय तिवारी	18
मन का ठेला - मधु धुर्वे	20
जीवन का पेड़ - नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउण्डेशन	22
तुम भी बनाओ	24
गोपी गवैया बाघा बजैया - उपेन्द्रकिशोर रायचौधरी	25
साँगानेरी ब्लॉक प्रिंट - शिवनारायण गौर	28
एक महल दिमाग में - सजिता नायर	31
मेरा पन्ना	34
भूल-भुलैया	40
माथापच्ची	41
भूल सुधार	42
चित्रपहेली	43
लहराई नदी, रेवती ओ रेवती - आलोक कुमार मिश्रा	44

आवरण चित्र: लेपाक्षी के वीरभद्र मन्दिर में बना चित्र।

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी
सजिता नायर
गुल सारिका झा

डिज़ाइन
कनक शशि

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

वितरण
झनक राम साहू

सहयोग
कमलेश यादव

एक प्रति : ₹ 50
वार्षिक : ₹ 500
तीन साल : ₹ 1350
आजीवन : ₹ 6000
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं। एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
एकलव्य फाउण्डेशन, जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026, फोन: +91 755 2977770 से 3 तक
email - chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in; www.chakmak.eklavya.in, www.eklavya.in

गप्प सुनो अब, गप्प!

रावेंद्रकुमार रवि
चित्र: हीरा धूर्वे

नींद आ गई झप्प,
गप्प सुनो अब, गप्प!
गप्प से निकला लोटा,
ना पतला, ना मोटा!

पर यह लोटा रीता है,
इसमें बन्द पपीता है!
खाता इसको चीता है,
जिसकी पूँछ पलीता है!

चूहा खींच रहा यह पूँछ,
समझ इसे बिल्ली की मूँछ!
मूँछ पकड़कर बन्दर झूले,
कहता – कोई मुझको छूले!

घुसी नाक में पतली सींक,
बहुत ज़ोर से आई छींक!
गिरा फिसलकर टप्प,
गप्प सुनो अब, गप्प!

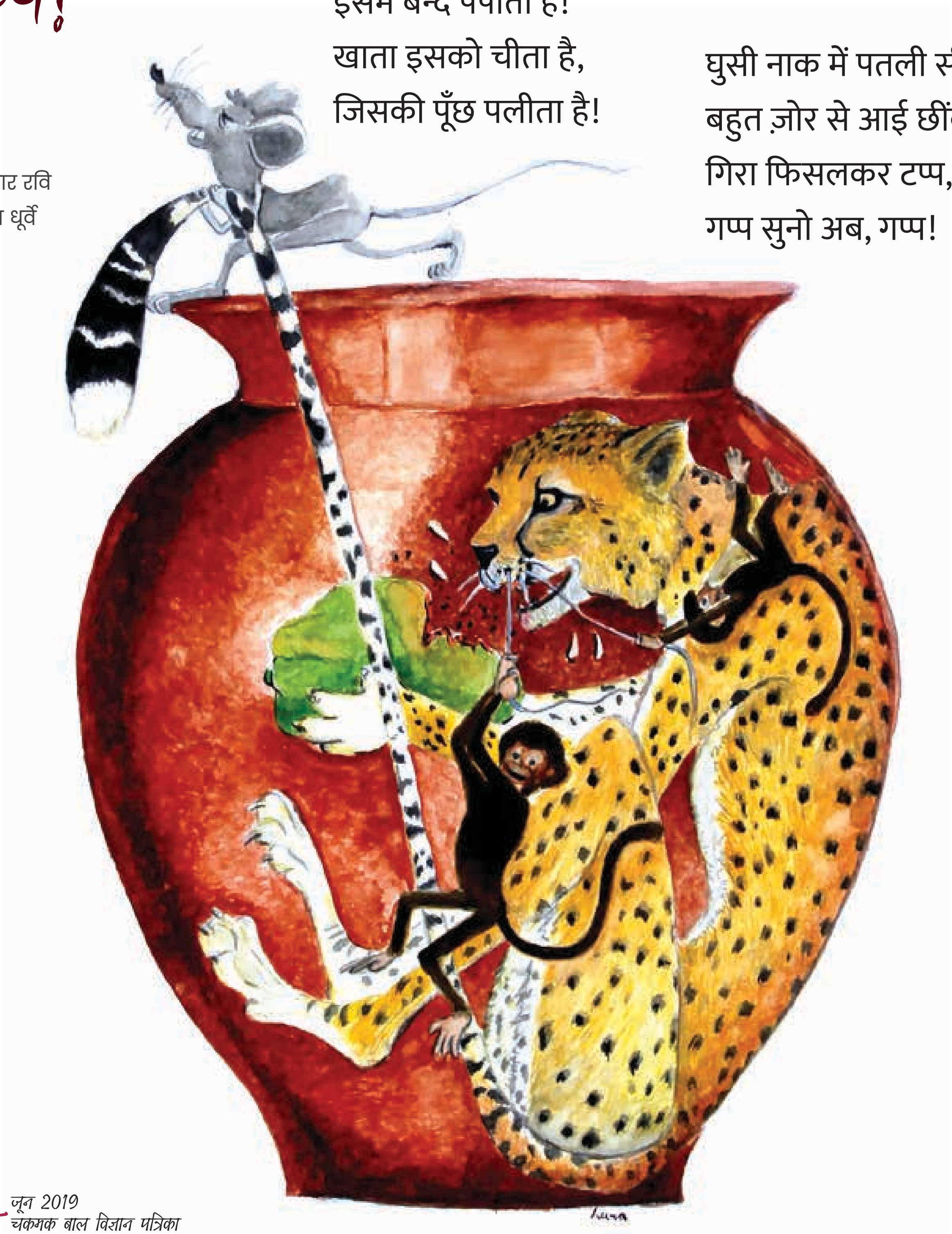

चित्र 1. जंगली सूअर (जे बेन्नेट का छायाचित्र)

जंगली सूअर का शिकार

सी एन सुब्रह्मण्यम्

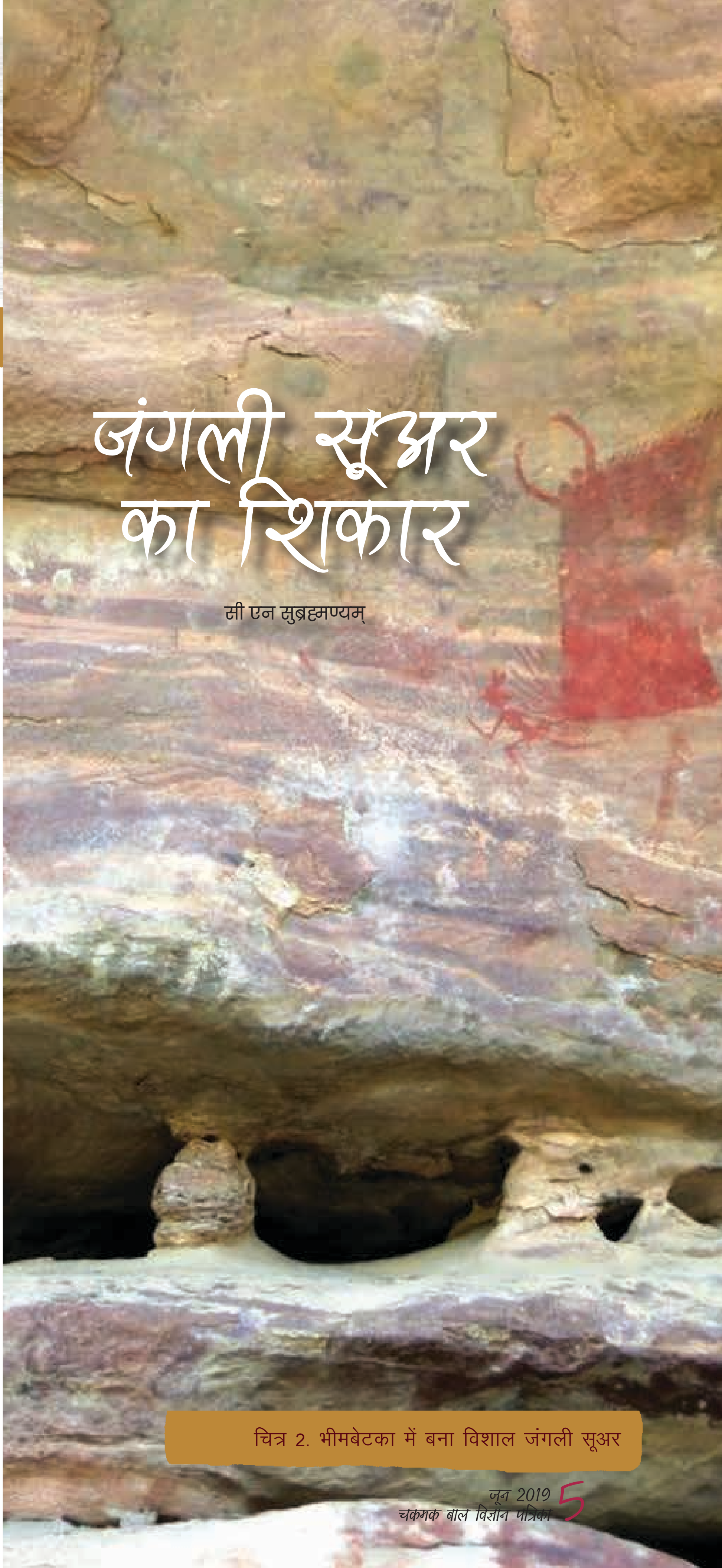

चित्र 2. भीमबेटका में बना विशाल जंगली सूअर

हमारे देश में पाए जाने वाला जंगली सूअर एक दमदार जानवर है। इसे देखते ही लोगों के छक्के छूट जाते हैं। लगभग तीन फुट ऊँचा और पाँच फुट लम्बा यह जानवर अपनी पीठ के खड़े बालों के कारण बहुत प्रभावी लगता है। यह विशाल जानवर झुण्ड में रहता है और काफी आक्रामक माना जाता है; झगड़े में यह कभी पीछे नहीं रहता है। पुराने समय के शिकारी शेर या हाथी के शिकार से ज़्यादा मुश्किल इस जंगली सूअर के शिकार को मानते थे। और यह बात हमारे साहित्य और कला में भी देखने को मिलती है।

पाँच हज़ार साल पहले का चित्र...

हमारे देश के सबसे प्राचीन चित्रों में से कुछ चित्र भीमबेटका में देखे जा सकते हैं। जंगली सूअर के शिकार का यह चित्र भीमबेटका के सबसे प्रभावशाली चित्रों में से है। यह चित्र कुछ 8 मीटर की ऊँचाई पर एक ऊँची चट्टान पर बना हुआ है।

इस चित्र में उस भीमकाय सूअर के सामने मनुष्य कितना पिद्दी-सा लग रहा है! उसके सामने एक चूहे के मुँह वाला आदमी अपनी जान बचाकर भाग रहा है, जबकि आसपास कुछ शिकारी धनुष-बाण लिए खड़े हैं। सूअर को और भयावह बनाने के लिए उसके सिर पर

चित्र 3 और 4. छत्तीसगढ़ के देव बलौदा मन्दिर में बने सूअर शिकार के दृश्य

दो सींग भी बनाए गए हैं। (वैसे सूअर जब आक्रामक होते हैं तो उनके कान खड़े हो जाते हैं। हो सकता है कि कलाकार ने इस बात को सींगों से दिखाया हो।) यह चित्र आज से लगभग चार-पाँच हज़ार साल पुराना है। इस चित्र को देखकर तो लगता है कि इसका शिकार शायद असफल रहा और हमारे शिकारी जान बचाकर भाग आए।

जंगली सूअर बाद में ‘वराह अवतार’ के रूप में पूजा जाने लगा। कई मध्यकालीन साम्राज्यों के झण्डों में इसे अंकित किया गया। यही नहीं विजयनगर साम्राज्य के सोने के सिक्कों को वराहम् कहा जाता था (संस्कृत में वराह का मतलब होता है - सूअर)।

सात सौ साल पहले का शिल्प...

छत्तीसगढ़ के भिलाई इस्पात कारखाने के पास एक 700 साल पुराना मन्दिर है, जिसे देव बलौदा मन्दिर कहा जाता है। इस मन्दिर की बाहरी दीवारों पर बहुत सुन्दर नक्काशी की गई है। इन नक्काशियों में मुझे एक सूअर के शिकार का चित्रण दिखा। इस चित्र का मनुष्य भीमबेटका के मनुष्य से काफी आगे बढ़ चुका लगता है।

राजा साहब घोड़े पर सवार होकर शिकार पर निकले हैं। उनके आगे सैनिकों का एक झुण्ड सूअर को घेरकर मार रहा है। शिकारी कुत्ते उनकी मदद कर रहे हैं और बेबाक होकर सूअर के आगे-पीछे कूदकर उस पर वार कर रहे हैं। मुझे ये देसी कुत्ते बेहद निडर और फुर्तीले लगते हैं। इस शिल्प में भी तुम देख सकते हो कि सूअर लगभग आदमकद है। मनुष्य ने कुत्ते को तो आगे कर दिया है, मगर खुद बेचारा पीछे ही खड़ा हुआ है। और राजा साहब तो सबसे पीछे हैं।

और पाँच सौ साल पहले, लेपाक्षी में बना चित्र

लेकिन जंगली सूअर का सबसे डरावना चित्रण तो

चित्र 5. लेपाक्षी के वीरभद्र मन्दिर में बना चित्र। सूअर अर्जुन पर आक्रमण कर रहा है और पीछे किरात शिकार कर रहे हैं।

मुझे आन्ध्र प्रदेश के लेपाक्षी मन्दिर की छत पर बने चित्रों में देखने को मिला। यह लगभग सन् 1520 के आसपास बना था। यहाँ पर प्रसिद्ध संस्कृत काव्य, किरातार्जुनीयम् की कहानी का चित्रण है। इस कहानी में अर्जुन शिवजी के दर्शन के लिए तप कर रहा होता है और शिव उसकी परीक्षा लेने के लिए एक किरात (आदिवासी शिकारी) का रूप लेकर वहाँ पहुँचते हैं। तभी एक विशाल जंगली सूअर अर्जुन पर वार करता है और अर्जुन अपने को बचाने के लिए उस पर बाण चलाता है। उसी समय वह किरात भी अपना बाण चलाता है। सूअर तो मर जाता है, मगर किरात और अर्जुन के बीच भयंकर लड़ाई शुरू हो जाती है कि किसके बाण से वह सूअर मरा और मरा हुआ सूअर किसे मिले।

चित्र 5 में अर्जुन और अन्य तपस्वियों पर आक्रमण करने वाला सूअर दिख रहा है। सूअर का पीछा करते हुए उसका शिकार कर रहे किरात भी दिख रहे हैं।

इसी चित्र के क्लोज़अप में हम सूअर के विशाल रूप को देख सकते हैं। आगे के दोनों पैर हवा में हैं और पीछे का भी एक पैर उठा हुआ है। वह एक टाँग पर अपना पूरा वज़न रखकर अर्जुन पर कूदने के लिए तैयार है। जंगली सूअरों का अध्ययन करने वाले बताते हैं कि नर सूअर जब दूसरे नर पर आक्रमण करता है तो वह इसी तरह खड़ी मुद्रा में वार करता है। आकार और रुतबे में यह हमें भीमबेटका के सूअर की याद दिलाता है। उस चित्र के शिकारियों की तरह ये शिकारी भी पिद्दी दिख रहे हैं। सूअर पर तीर साधने वाले शिकारी को देखो - कितना छोटा लगता है वह! इस सूअर की आक्रामकता से डरकर जंगल के सारे जानवर और पक्षी कूद-फाँदकर भाग रहे हैं - हिरणें, खरगोश, तोते...। कुछ जानवर तो दुबककर बैठ गए हैं। यहाँ भी एक शिकारी कुत्ता है, मगर वह भी डरा हुआ है, देव बलौदा वाले कुत्ते की तरह निडर नहीं है।

यह सोचकर मुझे अचरज होता है कि पाँच हज़ार साल पहले के भीमबेटका के कलाकारों से लेकर पाँच सौ साल पहले के लेपाक्षी के कलाकारों तक जंगली सूअर की कल्पना में इतनी निरन्तरता कैसे है?

चित्र 6. चित्र 5 का क्लोज़अप

किट्टू उड़नछू! - 2

दुनिया का सबसे अजीबोगरीब परिवार

हर्षिका उदासी
अंग्रेज़ी से अनुवादः भरत त्रिपाठी
चित्रः लावण्या नायडू

यह हर्षिका उदासी की अंग्रेज़ी किताब *Kittu's Very Mad Day* का हिन्दी अनुवाद है।

अब तक तुमने पढ़ा :
माधव नाम का आइसक्रीम वाला एक छोटे बच्चे को अपना ग्राहक समझकर आइसक्रीम के लिए पूछता है। वह बातूनी बच्चा 'किट्टू' आइसक्रीम खा लेता है और पैसे भी नहीं देता, बल्कि माधव के हर सवाल का अजीब-सा जवाब देता है। इससे माधव झल्ला जाता है। लेकिन जब किट्टू उसे बताता है कि वह अपाहिज है और वह खो गया है तो माधव पिघल जाता है। अपनी साइकिल पर लादकर माधव उसे अपने साथ ले जाता है।
अब आगे...

दस साल का किट्टू बहुत मनमौजी लड़का था, कुछ ज़्यादा ही, जैसा कि उसकी माँ हमेशा कहती थीं। हालाँकि वो इस बात से काफी खुश थीं। एक बड़े परिवार को सँभालते हुए, और स्वतंत्र सोच रखने वाले बेटे को बड़ा करते हुए वो थक चुकी थीं।

किट्टू और उसका परिवार मुम्बई में रहता था। अपने मन में किट्टू अपने परिवार को दुनिया का सबसे अजीबोगरीब परिवार कहता था, क्योंकि वो लोग वाकई में ऐसे थे।

उसके पिता हीरा व्यापारी थे। बहुत अमीर व्यापारियों में से तो कतई नहीं थे, लेकिन उनका बड़ा परिवार बहुत आराम से रहता था। पप्पा को अपने बेटे की ज़िन्दगी से ज़्यादा लेना-देना नहीं था और उन्हें उससे कोई उम्मीद भी नहीं थी। किट्टू जल्दी ही इस बात को समझ गया था।

किट्टू पर जो जान छिड़कती थीं, वो थीं इती फुई। वो किट्टू के तेज़ दिमाग और 'मुझे सब पता है' वाले रवैये का खूब श्रेय लेती थीं। जब भी कोई किट्टू के बात करने के तरीके से प्रभावित हो जाता तो इती फुई खूब खुश होतीं और कहतीं, "हाँ

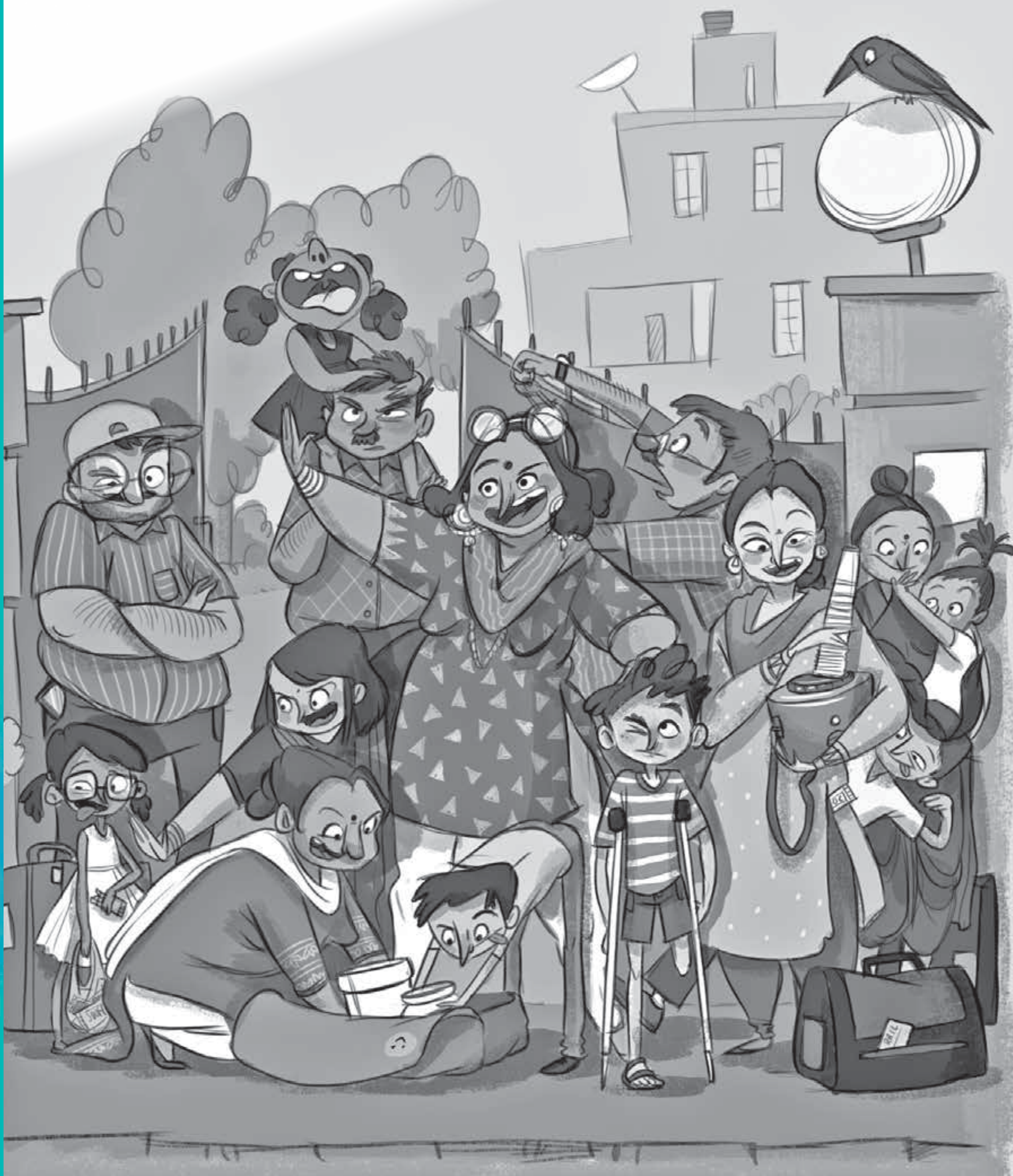

तो! परिवार में कोई तो है जिसके नक्शे-कदम पर किट्टू चल रहा है!"

किट्टू के गुम होने के इस पूरे वाकये की शुरुआत तब हुई जब पप्पा को बिज़नेस टूर पर पन्ना जाना था। पन्ना मध्य प्रदेश का एक छोटा-सा शहर है और हीरों के लिए मशहूर है। चूँकि ये पन्ना नेशनल पार्क के लिए भी जाना जाता है, इसलिए टाइगर देखने के लिए परिवार का हर व्यक्ति पप्पा के संग लगना चाहता था। किट्टू को लगा कि दुनिया का सबसे अजीबोगरीब परिवार इतना भयानक शोरगुल करेगा कि सारे के सारे टाइगर वहाँ से भाग जाएँगे। जल्दी ही ये तय हुआ कि पूरा परिवार वहाँ छुट्टी मनाने जाएगा।

पूरा परिवार यानी माँ, पप्पा, इती फुई। पप्पा के दो भाई – बटुक काका और अनीक काका। उनकी पत्नियाँ – मोनी काकी और फोरम काकी। इन दो दम्पतियों के चार बच्चे – पुन्नी, चिक्की, पिब्बू और पोटू। इनके अलावा घर की कामवाली मन्नी और उनकी बेटी चिन्मी। और किट्टू। यानी आठ बड़े लोग और छह बच्चे। बाप रे!

किट्टू को हमेशा ये लगता था कि उसके परिवार के बड़े लोग म्यूज़ियम में रखी जाने वाली कीमती चीज़ों जैसे हैं। उसे समझ में आ गया था कि ये बड़े लोग दरअसल ऐसे बच्चे थे जिनके शरीर तो बड़े हो गए थे लेकिन उनमें बड़प्पन नहीं आया था। वो इन्हें 'छोटे बड़े लोग' कहता था, जो बेवकूफी भरी बातों पर लड़ाई करते थे। जैसे कि रात के समय लाइटें क्यों बन्द नहीं हुई थीं, मटके में पानी भरने की ड्यूटी किसकी थी या किचन से एक और चम्मच लाने के लिए कौन जाएगा। कभी-कभी वो लोग इस बात पर भी लड़ते थे कि घर किसका है। उनका बर्ताव समझ से परे था।

जब किट्टू थोड़ा बड़ा हुआ तो उसे लगा कि उसके चचेरे भाई-बहन भी बड़ी खूबी से अपने माता-पिता जितने ही अजीब और चिड़चिड़े होते जा रहे थे।

बटुक काका और मोनी काकी की बेटी पुन्नी परिवार के बच्चों में किट्टू के बाद सबसे बड़ी थी। वो किट्टू से एक साल छोटी थी। किट्टू ने ये जान लिया था कि अगर शान्ति से रहना है तो उसका सबसे आसान तरीका है पुन्नी को खुश रखना। पर ये आसान नहीं था। पुन्नी को दो चीज़ों से बहुत चिढ़ होती थी। एक तो उसे हर उस व्यक्ति से चिढ़ होती थी जो उससे लम्बा हो – जिसका मतलब था चिक्की और चिन्मी को छोड़कर परिवार का हर व्यक्ति। और दूसरा, उसे सफर पर जाने से बहुत चिढ़ होती थी।

जो एक व्यक्ति पुन्नी को अपने बस में कर पाती थी वो थी उसकी बहन चिक्की। अगर और खुलकर कहें तो तब जब वो 'वैं...वैं!!!' करके रोना शुरू कर देती थी। ये छोटी शैतान ज़रा में रोने-चिल्लाने लगती थी। अपनी हर बात मनवाने का ये उसका सदाबहार तरीका था। शार्पनर नहीं मिल रहा? 'वैं...वैं!!!' मेवे वाली चॉकलेट आइसक्रीम नहीं मिली? 'वैं...वैं!!!' लगातार तीसरी रात भी अपना पसन्दीदा रेलवे इंजन वाला नाइट सूट पहनना था, नहीं पहनने को मिला तो 'वैं...वैं!!!'

किट्टू का मानना था कि अनीक काका का बेटा तो अनीक काका से भी ज़्यादा खीझ दिलाता था। आठ साल का पिब्बू अपनी बात मनवाने के लिए हर हथकण्डा अपना सकता था। अगर वो और पुन्नी पार्टनर बन जाते तो दुनिया के सबसे बड़े 'गुण्डे' होते। जब कभी भी वो साथ हो जाते तो किट्टू की आफत हो जाती। हालाँकि उनकी जोड़ी जल्दी ही टूट भी जाती थी क्योंकि पिब्बू पुन्नी से लम्बा था।

पिब्बू इतराता बहुत था। वो किट्टू को डफोड़ (मूर्ख) बुलाता था। लेकिन किट्टू को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था क्योंकि उसे अपने बारे में ये पता था कि वो और जो कुछ भी हो कम से कम मूर्ख तो नहीं है।

पोटू को खाने के अलावा और किसी चीज़ से कोई लेना-देना नहीं था। किट्टू नहीं जानता था कि पोटू का नाम खाने के प्रति उसके लगाव को देखकर रखा गया था या फिर पोटू नाम रखे जाने के कारण उसके भीतर खाने के प्रति इतना विशेष आकर्षण पैदा हो गया था। पोटू अपना खाना निगलने के बाद बाकी सभी लोगों की थालियों में से खाना शुरू कर देता था। वो इतना खाता था जितना कोई बॉडी बिल्डर खाता

है, और अभी वो सिर्फ छह साल का था। पोटू में से हमेशा किसी न किसी तरह के खाने की गन्ध आती रहती थी, इसीलिए किट्टू को उसके बगल में बैठना बिलकुल अच्छा नहीं लगता था।

किट्टू के भाई-बहनों को वो अजीब लगता था इसीलिए वो लोग उससे ज़्यादा वास्ता नहीं रखते थे। दरअसल किट्टू इस बात से काफी खुश रहता था। उसने तय कर लिया था कि सफर में वो इन लोगों से बिलकुल दूर बैठेगा।

परिवार में जो एकमात्र बच्चा किट्टू को पसन्द था, वो थी चिन्मी। सिर्फ तीन साल की चिन्मी, अपनी माँ मन्नी से बिलकुल अलग थी जो हर किसी बात पर शर्माती और संकोच करती थीं। चिन्मी खूब अच्छे से समझती थी कि उसे क्या चाहिए, और घर में सबसे छोटी होने के कारण उसे सभी बड़ों का ज़्यादा ही लाड़-प्यार मिलता रहता था। किट्टू को उसका बड़बड़ाना बहुत भाता था। वो किट्टू को टिट्टू बुलाती थी, जिस पर मन्नी शर्मिन्दा हो जाती थीं, हालाँकि उन्हें तो वैसे भी किसी भी बात पर शर्म आ जाती थी। लेकिन टिट्टू बोलती हुई चिन्मी किट्टू को बहुत प्यारी लगती थी।

किट्टू और चिन्मी दोनों की एक बात पर और जमती थी, और वो ये कि दोनों को ही पिब्बू बिलकुल नापसन्द था। परिवार के इस 'दादा' को 'टिब्बू' कहलाना कतई पसन्द नहीं था, और इसके लिए वो चिन्मी को पूरे समय सताता रहता था। चिन्मी इसकी शिकायत किट्टू से करती थी और किट्टू खुशी-खुशी पिब्बू की छाती में कोहनी मार देता था।

पन्ना के लिए निकलने से पहले ही दुनिया के सबसे अजीबोगरीब परिवार की बेवकूफियाँ शुरू हो गईं। खजुराहो जाने वाली ट्रेन पकड़ने के लिए वो लोग घर से बस निकलने वाले थे। बैग पैक हो चुके थे, कुछ लोग घर के बाहर आकर खड़े थे, कुछ टैक्सी को आवाज़ लगा रहे थे, कुछ आखिरी वक्त तक भी अपने बैगों में छोटी-मोटी चीज़ें ठूँस रहे थे, जबकि कुछ सिर्फ टकटकी लगाए खड़े थे। लेकिन एक बात थी जो सभी कर रहे थे। सब के सब बोल रहे थे। एक साथ, एक ही समय पर।

आखिरकार किसी को याद आया कि बाहर के दरवाज़े के ताले की चाबी किसी के पास भी नहीं थी। 15 मिनट तक बेवजह लड़ने-झगड़ने और एक-दूसरे को ज़िम्मेदार ठहराने के बाद किसी को ध्यान आया कि उनकी ट्रेन छूटने वाली थी। किट्टू, जो बड़े मज़े से ये नौटंकी देख रहा था, ने सुझाव दिया कि वो लोग उनकी पड़ोसी, स्मिता आंटी से उस ताले की दूसरी चाबी माँग लें।

उनकी छुट्टियाँ उसी तरह 'इत्मीनान' से गुज़रने लगीं जिस तरह 14 लोगों के एक साथ होने पर गुज़र सकती थीं। खाने को लेकर हर बार तबाही मचती थी। पहला व्यक्ति नान का ऑर्डर देता, दूसरा व्यक्ति बटर रोटी का। फिर पहले वाला अपने ऑर्डर को बदलकर बटर नान का ऑर्डर दे देता तो दूसरा बड़बड़ करने लगता कि पहले ने उसकी नकल की है। चिक्की की 'वैं...वैं!!!' शुरू हो जाती और पोटू चुपचाप सबका खाना चट कर जाता अगर एक पल के लिए भी उन लोगों का ध्यान अपनी थालियों से भटकता। किट्टू को तो पूरा यकीन था कि जिस-जिस वेटर ने उन्हें खाना लाकर दिया होगा उसने उसी दिन नौकरी छोड़ने की कसम खा ली होगी।

और फिर सफर के आखिरी दिन, पूरे एक हफ्ते तक छुट्टियाँ बिताने के बाद जब वो लोग घर लौट रहे थे, उनसे वो ज़बरदस्त भूल हुई। किट्टू के पप्पा का

काम निपट चुका था और सबने पन्ना नेशनल पार्क और पाण्डव फॉल घूम लिया था।

सारी गड़बड़ की शुरुआत इती फुई ने की। जैसे ही वो लोग खजुराहो जाने के लिए निकले, जो वहाँ से दो घण्टे का रास्ता था, इती फुई ने ऐलान किया कि निकलने से पहले वो टॉयलेट जाना भूल गईं। अनीक काका, जिनकी हमेशा ही इती फुई से बहस होती रहती थी, ने उनसे कहा कि वो ज़्यादा हिले-डुले बिना सीधी बैठी रहें और पेशाब को रोके रहें।

इती फुई चुपचाप बैठने वालों में से नहीं थीं, और सीधी बैठने वाली तो बिलकुल ही नहीं। उन्होंने जवाबी हमले दागे। "अच्छा! मैं सीधी बैठी रहूँ। जब तुम आदमी लोगों को आती है तो तुम तो कहीं भी चले जाते हो! तुम बिलकुल पागल हो अन्नू," वो गरजकर बोलीं।

"खबरदार जो मुझे अन्नू कहा तो!" अनीक काका ने दहाड़ते हुए कहा। प्यार से पुकारे जाने वाले नामों से उन्हें सख्त नफरत थी खासकर जब कोई उन्हें इस तरह पुकारता था।

इती फुई को जैसे ही अनीक काका की इस कमज़ोरी की याद आई उन्होंने चिल्लाना शुरू कर दिया "अन्नू, अन्नूनू, अन्नूनूनू! मुझे सच में सूसू करनी है!"

'वैं...वैं!!!' चिक्की का राग शुरू हो गया।

'हलवा!' पोटू बोला।

ऐसे समय में, पप्पा परिवार के अकेले समझदार व्यक्ति लगते थे।

"बस करो इती! छी, बच्चे क्या सोचेंगे?" पप्पा बोले, और सब बच्चे खीसें निपोरने लगे।

"ये तो शरीर की एक सामान्य क्रिया है और सब लोगों को आती है, इसमें सोचने की क्या बात है?" इती फुई फुनफुनाते हुए बोलीं।

इस बीच ड्राइवर को एक ढाबा नज़र आ गया था। उसे डर लगने लगा था कि अगर इस गरजती-बरसती महिला की बात मानकर इसे कहीं उतारा नहीं गया तो वहाँ दंगा छिड़ जाएगा, इसलिए उसने अपनी मिनी बस को रैन बसेरा ढाबे पर रोक दिया।

अब चूँकि वो लोग वहाँ रुक ही गए थे तो उन्होंने मौके का फायदा उठाकर खाना खाने का निर्णय लिया, भले ही तब सिर्फ 11 बजे थे। ज़ाहिर है कि इससे सबसे ज़्यादा खुशी पोटू को हुई। और बेतरतीब ढंग से किए गए एक और यादगार भोजन के बाद वो अपनी राह चल दिए।

लेकिन सब नहीं गए। एक छूट गया। सबने मान लिया कि किट्टू किसी और के साथ होगा, और ऐसा मानकर वो खजुराहो के लिए निकल पड़े।

पर अपना हीरो था कहाँ?

ढाबे के पीछे। एक बच्चे को साइकिल चलाते हुए देख रहा था।

किट्टू को एक पैर के नहीं होने से कभी बहुत परेशानी नहीं हुई थी। चूँकि उसका एक पैर शुरू से ही नहीं था इसलिए उसने उसके बगैर काम चलाना सीख लिया था। उसे बैसाखियों से अच्छा सहारा मिल जाता था और वो उनका उपयोग बड़ी कुशलता से करता था। लेकिन एक काम ज़रूर ऐसा था जिसे नहीं कर पाने की वजह से उसे बहुत बुरा लगता था कि उसका सिर्फ दायाँ पैर ही था। और वो था साइकिल न चला पाना। उसे साइकिल के पहियों की लय और उनका बिना किसी रुकावट के घूमते जाना बहुत प्यारा लगता था। किट्टू को उसमें कुछ जादुई-सी बात लगती थी। जब उनका पड़ोसी हर हफ्ते छुट्टी के दिन बड़ी बारीकी से अपनी साइकिल में तेल डालता, एक-एक स्पोक को टाइट करता, हैंडिल को चैक करता तो किट्टू उसे ध्यान से देखा करता था। उसे ये देखने में इतना मज़ा आता था कि वो शनिवार-इतवार की पूरी छुट्टी यही देखते-देखते बिता सकता था।

ढाबे के पीछे एक बच्चा ज़ंग लगी साइकिल चला रहा था और उससे भी कम उम्र का एक बच्चा उसके पीछे लगा हुआ था। किट्टू उन्हें एकटक देख रहा था। उन लोगों के साथ वो भी रह-रहकर हँस रहा था। उसे उस वक्त बिलकुल ऐसा लग रहा था कि वो भी एक साइकिल चला रहा है और जब-जब वो लड़का हैंडिल मोड़ता, किट्टू भी अपनी काल्पनिक साइकिल के हैंडिल मोड़ देता।

किट्टू अपने इस 'खेल' में इतना डूब गया कि उसे एहसास ही नहीं हुआ कि उसका परिवार वहाँ से निकल चुका था।

...जारी

मनुष्य कितना तापमान झेल सकते हैं

सुशील जोशी
चित्र: इशिता देबनाथ बिस्वास

एक मित्र ने बहुत आसान-सा सवाल पूछा था। भोपाल में उस दिन पारा 45 डिग्री सेल्सियस को छू रहा था। उन्होंने इस तापमान को फैरनहाइट में बदला तो यह हमारे शरीर के सामान्य तापमान (98.4 डिग्री फैरनहाइट) से काफी अधिक (113 डिग्री फैरनहाइट) निकला। चिन्ता की बात यह थी कि हमारा शरीर इतने अधिक तापमान को सँभालता कैसे है।

शरीर का अन्दरूनी तापमान

इस मामले में चिन्ता का प्रमुख कारण है, हमारे व अधिकांश अन्य जन्तुओं के शरीर के अन्दर चल रहीं कई रासायनिक क्रियाएँ। ये कुछ इस तरह एडजस्ट हुई हैं कि 37-38 डिग्री सेल्सियस के आसपास ही बढ़िया से चलती हैं। ये वही क्रियाएँ हैं जो हमें जीवित रखती हैं, चलता-फिरता रखती हैं।

ये सारी रासायनिक क्रियाएँ किसी न किसी उत्प्रेरक (catalyst) की मदद से चलती हैं। ये उत्प्रेरक 37 डिग्री सेल्सियस पर ही भलीभाँति काम करते हैं। इनके कामकाज (और हमारे स्वस्थ बने रहने) के लिए ज़रूरी है कि शरीर का अन्दरूनी तापमान 37-38 डिग्री सेल्सियस के इर्द-गिर्द बना रहे।

जीव वैज्ञानिकों ने तापमान के रखरखाव के हिसाब से सारे जन्तुओं को दो समूहों में बाँटा है। एक वे जन्तु हैं जो बाहरी वातावरण के तापमान में कमी-बेशी होने पर भी अपने शरीर का तापमान स्थिर बनाए रखने की क्षमता से लैस होते हैं। बाहरी वातावरण का तापमान घटने-बढ़ने पर इनके शरीर में कुछ ऐसी क्रियाएँ शुरू होती हैं जो शरीर के तापमान को यथेष्ट (पर्याप्त) स्तर पर बनाए रखती हैं। किसी समय इन्हें गर्म खून वाले जन्तु कहा जाता था, आजकल इन्हें स्थिर तापमान वाले जन्तु कहते हैं।

दूसरे किस्म के जन्तु वे हैं जिनके शरीर में तापमान को स्थिर बनाए रखने की कोई व्यवस्था नहीं होती। लिहाज़ा, इनके शरीर का तापमान बाहरी वातावरण के साथ घटता-बढ़ता है। ये अपना काम चलाने के लिए व्यवहार में परिवर्तन पर निर्भर रहते हैं। जैसे छाया में चले जाना, पानी में उतर जाना, ज़मीन के नीचे घुस जाना वगैरह। पहले इन्हें ठण्डे खून वाले जन्तु कहते थे।

कैसे सँभलता है हमसे बदलता हुआ बाहर का तापमान

मौसम को देखते हुए बात को सिर्फ बढ़ते तापमान के सन्दर्भ में देखेंगे।

बाहरी वातावरण के बढ़ते तापमान से बचाव के लिए हमसे पसीना छूटता है। पसीना आना एक अनैच्छिक क्रिया है जो बाहरी तापमान को भाँपकर स्वत: शुरू हो जाती है। हमारी चमड़ी में खून की नलिकाओं का जाल फैला है। यही इसमें प्रमुख भूमिका निभाता है। अब इसमें न जाएँ कि मस्तिष्क से किस ग्रन्थि को क्या सन्देश मिलता है और वह पसीना छोड़ना शुरू कर देती है। लब्बो लुआब यह है कि जब पसीना शरीर से बाहर निकलता है और हवा के सम्पर्क में आता है तो उसका वाष्पीकरण शुरू हो जाता है। जैसा कि सब जानते हैं वाष्पीकरण से ठण्डक पैदा होती है। यदि नहीं जानते तो बता दें कि वाष्पीकरण से ठण्डक होने का सबसे बढ़िया उपयोग हम मटके के रूप में करते हैं। मटका रंध्रमय होता है (इसमें बहुत ही छोटे-छोटे छेद होते हैं)। रंध्रों में से पानी बाहर निकलता है और मटके की सतह पर आकर वाष्पीकृत हो जाता है। और मटके के अन्दर का पानी ठण्डा हो जाता है।

हमारा शरीर एक मटका

देखा जाए तो गर्मियों में मनुष्य का शरीर एक मटके की तरह काम करता है। पसीना निकलता है, त्वचा की सतह पर आकर वाष्पीकृत होता है और शरीर के अन्दरूनी हिस्से को ठण्डा बनाए रखता है। चूँकि

चलती हुई हवा वाष्पीकरण को बढ़ावा देती है, इसलिए पंखे के नीचे बैठना सुकून देता है। दूसरी ओर, यदि वातावरण में पहले से बहुत नमी (उमस) हो तो पसीने का वाष्पीकरण भलीभाँति नहीं हो पाता। इसीलिए नमीयुक्त स्थानों पर या बारिश में तापमान बहुत अधिक न हो तब भी परेशानी होने लगती है।

ज़ाहिर-सी बात है कि यदि बाहर का तापमान बढ़ रहा है और आपका शरीर पसीना उड़ा रहा है, तो पानी की ज़रूरत भी ज़्यादा होगी। इसलिए गर्मियों में ज़्यादा प्यास लगती है। यदि पानी न मिले तो पसीना बनने और उड़ने की क्रिया बाधित होती है और शरीर का तापमान बढ़ने लगता है यानी बुखार आ जाता है। यदि तापमान बढ़ने की यह क्रिया बहुत तेज़ी-से हो तो इसे लू लगना कहते हैं और यह स्थिति जानलेवा हो सकती है।

दोपहर का आलस बचाता है हमें

एक-दो छोटी-छोटी बातें कहकर बात समाप्त करते हैं। पहली बात यह है कि पसीने के अलावा शरीर कई अन्य तरीके भी आज़माता है। इनमें से एक महत्वपूर्ण तरीके का सम्बन्ध इस बात से है कि शरीर में गर्मी पैदा होने की दर कम कर दी जाए। सामान्यत: हमारे शरीर में सबसे अधिक गर्मी मांसपेशियों के काम से पैदा होती है।

तापमान बढ़ने पर मस्तिष्क मांसपेशियों को कम काम करने का सन्देश देता है। गर्मियों में थकान की यही वजह है। दूसरी बात है कि पसीना सिर्फ पानी नहीं होता। यदि तुमने कभी चखा हो तो पसीना खारा होता है। यह खारापन पसीने में लवणों की उपस्थिति की वजह होता है। इसका मतलब है कि पसीने के साथ शरीर से लवण भी निकल जाते हैं। लवण शरीर की कई क्रियाओं के लिए ज़रूरी होते हैं। जब लवण निकलते हैं तो शरीर के सुचारू कामकाज में दिक्कत आने लगती है। इसलिए पानी के साथ तुम को लवणों की भी भरपाई करनी होती है।

कुछ अन्य उपाय

ध्यान देने की बात यह है कि ताप नियंत्रण के लिए हम सिर्फ पसीने पर निर्भर नहीं हैं। इसके लिए हम कई व्यवहारगत उपाय भी अपनाते हैं। जैसे छाया में रहना, धूप में निकलते वक्त सिर को ढँककर रखना, एक-दो बार नहा लेना या सिर पर पानी डाल लेना वगैरह। ये सब गर्मी के स्रोत को न्यूनतम करने के प्रयास हैं।

अब सवाल यह रह जाता है कि बाहरी तापमान के किस हद तक बढ़ने पर हमारा शरीर इस तरह मामले को सँभाल पाएगा। कई इलाकों में दिन का तापमान छाया में 50 डिग्री सेल्सियस से ऊपर पहुँच जाता है। पर्याप्त पानी (लवण-शकर युक्त) पीकर, सीधी धूप से बचकर वहाँ भी लोग इससे निपट ही लेते हैं।

स्रोत फीचर्स से साभार

"लो, पी लो," उस बुज़ुर्ग ने कहा।

मुझे अपना ध्यान फोन से हटाकर उनकी तरफ देखना ही पड़ा। वे सामने फुटपाथ पर रखे चाय के कप की तरफ इशारा कर रहे थे।

ओ-हो, तो दो के बजाय उन्होंने तीन कप चाय मँगवाई थी पीछे की दुकान से।

"उम्म, मेरे लिए, लेकिन क्यों?" "अरे यार, ले लो, कहीं जाने की जल्दी में तो नहीं हो ना?" हम्म, बात तो उनकी सही थी। जितना सोचा था उनका दोस्त उससे कहीं

दो मोची, एक ग्राहक और ठण्डी की एक शाम

रुद्राशीष चक्रवर्ती
अनुवाद: विनता विश्वनाथन

चित्र: कनक शशि

ज़्यादा समय ले रहा था, मेरी बेल्ट पर पॉलिश लगाने में। मैं सोच ही रहा था कि रंगमहल टॉकीज़ के उस चौराहे पर अपना समय कैसे बिताऊँ। कुछ ही मिनट पहले अपने पैरों को कुछ आराम देने की उनकी सलाह मानते हुए मैं फुटपाथ पर उनके बगल में बैठ गया था। बत्ती के पास, फुटपाथ पर दो मोची और एक ग्राहक... सब इन्तज़ार कर रहे हैं चमड़े के बेल्ट पर लगी पॉलिश के सूखने का।

और अब उन्होंने चाय पेश की थी। सुनहरी, खुशबूदार, गरमागरम, लुभानेवाली... मैंने और मना नहीं किया। मैंने अपना पेपर कप उठाया और उन्होंने अपना। फिर शहर की एक और ठण्डी शाम के ढलने के नज़ारे को देखते हुए हम सब ने चाय की चुस्की ली।

भीड़भाड़ वाला वह चौराहा गाड़ियों के शोर से भरा था। बाइक, स्कूटर, कार, बस सब कहीं जा रहे थे। कहाँ, इसका मुझे कुछ पता न था। और लोग, ढेर सारे लोग मेरे सामने से चलते जा रहे थे। चेहरे जिन्हें मैंने कभी नहीं देखा, जिन्होंने मुझे पहले कभी नहीं देखा। चेहरे जिन्हें मैं शायद फिर कभी न देखूँ। इन्सानों की बहती हुई एक नदी, जो मेरे चारों ओर थी। कितनी करीब और फिर भी कितनी अजनबी, दूर और उदासीन। मेरी पहुँच के बाहर। मैं अकेले बैठा था उस नदी के किनारे जो इन्सानों से कुलबुला रही थी।

हमने अपनी चाय एक बार फिर उठाई, एक और चुस्की ली। रंगमहल चौराहे पर, कितने प्यार और शान्ति से भरी थी यह आकस्मिक चाय की रसम। हवा ठण्डी थी, हमारे आसपास चेहरे सब रूखे, हर गुज़रते लम्हे के साथ अकेलेपन का एहसास बढ़ता जा रहा था... जब भोपाल में सर्दी की एक शाम को दो मोचियों और एक ग्राहक ने मिलकर चाय पीने का सोचा। और अब वो दो चेहरे मेरे दोस्त थे। और जैसे ही चाय का आखिरी घूँट मेरे गले से उतरा, मेरे अन्दर कहीं गर्माहट का एक प्यारा-सा एहसास जाग उठा।

क्यों-क्यों?

क्यों-क्यो में हमारा इस बार का सवाल छुट्टियों से जुड़ा था - कई स्कूलों में छुट्टियों में होमवर्क दिया जाता है। तुम्हें क्या लगता है छुट्टियों में होमवर्क दिया जाना चाहिए या नहीं, और क्यों?

छुट्टियों के बावजूद कई बच्चों ने हमें जवाब लिख भेजे। ज़्यादातर बच्चों ने कहा है कि छुट्टियों में होमवर्क मिलना चाहिए। लेकिन कुछ बच्चों की बात केवल सीधे-से 'हाँ' पर नहीं रुकी। पहली से लेकर नौवीं तक के बच्चों के कुछ जवाब हम यहाँ दे रहे हैं। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपना जवाब लिख भेजना...

•••••••••••

हमें होमवर्क दिया जाना चाहिए ताकि हम पढ़ाई से ज़्यादा दूर न रहें। लेकिन इतना कि 3-4 दिन में हम होमवर्क खतम कर सकें और फिर अलग-अलग जगह घूमने जा सकें। छुट्टियों में होमवर्क का मतलब सिर्फ पढ़ने और सवाल से नहीं बल्कि घर के कामों से भी है। हमें अलग-अलग क्राफ्ट के काम जैसे क्ले से फल और सब्ज़ी बनाना और नहीं तो पेंटिंग बनाना। होमवर्क के तौर पर हम पौधे भी लगाते हैं। तो हमें होमवर्क मिलना चाहिए।

मनिका नाराह, पाँचवीं, एल पी स्कूल, मजौली, असम

••••••••••

स्कूल,परीक्षा जब तक है तब तक होमवर्क भी करना ही होगा। होमवर्क मिले, पर कम।

हिमानी, नौवीं, राजकीय उच्च माध्यविक विद्यालय, चरधार, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

•••••••••••

गर्मी की छुट्टियाँ हैं। मज़े का समय है। हमें स्कूल से बहुत होमवर्क मिलता है। मेरे खयाल से यह उचित है। अब आप पूछोगे कि ऐसा क्यों है भाई? ऐसा इसलिए क्योंकि हमें जो होमवर्क मिलता है वह हमारी परीक्षा के भाग के अन्तर्गत होता है और इससे लगे हाथ हमारी परीक्षा की तैयारी भी हो जाती है। इसके कारण हमें बाद में परीक्षा का तनाव नहीं होगा और हम मज़े भी कर सकेंगे।

गणपत हिमांशु, पाँचवी, सैदपुर, पटना, बिहार

•••••••••••

आपने तो सुना ही होगा कि कुछ बच्चों को अपनी गर्मियों की छुट्टियों में होमवर्क करना पड़ता है। उफ! एक तो गर्मी और ऊपर से होमवर्क। हम पर भला इतना दबाव क्यों? पापा ने बोला इमैजिका चलेंगे, पर कब? मुझे तो लगता है कि गर्मी की छुट्टियों में होमवर्क मिलना ही नहीं चाहिए। हम बच्चे साल भर इस पढ़ाई के चक्कर में दौड़भाग करते रहते हैं। क्या हमें थोड़ी देर रिलेक्स नहीं मिलना चाहिए?

अक्षर अदीब, पाँचवीं, मुम्बई, महाराष्ट्र

चित्र: अक्षर अदीब
पाँचवीं, मुम्बई,
महाराष्ट्र

स्कूलों की छुट्टियों में होमवर्क मिलना चाहिए। पर अधिक होमवर्क नहीं देना चाहिए। क्योंकि इतना होमवर्क देंगे तो पूरी छुट्टियाँ हमारी तो होमवर्क बनाने में चली जाएँगी। ऐसे तो छुट्टियों में हम खेल कैसे पाएँगे। मुझे भी इतना होमवर्क दिया गया है कि क्या बताऊँ! गणित में चार चैप्टर पढ़ाए गए हैं। हर चार चैप्टर में 10 अभ्यास हैं और 40 अभ्यास मुझे बनाने हैं। इसके अलावा हिन्दी, संस्कृत, साइंस, राइटिंग तथा याद करने के लिए अलग से मिला है। मेरी एक छोटी बहन जो जूनियर क्लास में है उसे भी बहुत होमवर्क मिला है। हम इतना होमवर्क बनाते रहेंगे तो छुट्टियों का मज़ा कैसे करेंगे। इसलिए हमें होमवर्क देना चाहिए पर कम देना चाहिए। फिर बच्चे होमवर्क भी बना लेंगे, याद भी करेंगे और खेल भी लेंगे।

आदित्य राज, पाँचवीं, रोज़ पब्लिक हाई स्कूल, पटना, बिहार

हमें होमवर्क नहीं मिलना चाहिए, क्योंकि हमें खेलने का मौका मिलता है और हमें पापा के साथ धान के खेत जाना होता है। हम क्ले से बहुत-सी चीज़ें बनाते हैं और वो हमें पसन्द है।

जोसफ डोली, पाँचवीं, एल पी स्कूल, मजौली, असम

हमें होमवर्क नहीं मिलना चाहिए क्योंकि हम सालभर पढ़ते हैं। एक महीने का मौका मिलता है कहीं घूमने जाने का। और हम नानी के घर पे जाते हैं। वहाँ सबके साथ खेलने में मज़ा आता है। हमारे घर में सब आते हैं। और सबके साथ बगीचे में आम खाने जाते हैं। और साल भर तो पढ़ते हैं। सब लोग कहते हैं कि हमेशा पढ़ती रहती हो कभी खेलना भी चाहिए। खेलना भी सेहत के लिए फायदेमन्द होता है और हम दोस्तों के साथ बहुत मज़ा लेते हैं। हम बड़ों के साथ मेला देखने जाते हैं।और शादी में जाते हैं। इसलिए होमवर्क नहीं मिलना चाहिए।

सिद्रा बानो, खुशी राय, शालिनी और गौतम, सातवीं, अवध पीपल्स फोरम, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

हमें होमवर्क नहीं मिलना चाहिए क्योंकि फिर क्रिकेट नहीं खेल पाएँगे। छुट्टियों में हमें रिश्तेदारों के घर जाना होता है। मुझे घरवालों के साथ काम करना पसन्द है, इसलिए मुझे होमवर्क नहीं चाहिए।

दिब्यज्योती पगु, पाँचवीं, एल पी स्कूल, मजौली, असम

छुट्टी में होमवर्क मिलना चाहिए लेकिन ज़्यादा होमवर्क मिलने से हमारी गरमी की छुट्टी चली जाएगी और हम खेल नहीं पाएँगे, हम समर कैम्प में नाम नहीं लिखवा सकते हैं और समर कैम्प में अच्छी-अच्छी चीज़ें नहीं सीख पाएँगे।

समीर राज, चौथी, बाल भवन किलकारी, पटना, बिहार

होमवर्क नहीं देना चाहिए क्योंकि छुट्टी के बाद अनाया आ जाएगी और वह मुझे हर वक्त खेलने को कहती है, तो मेरे पास टाइम ही नहीं रहेगा।

ज़ैनुलब्दीन, पहली, अवध पीपल्स फोरम, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

छुट्टियों में काम करने का मन नहीं करता है। केवल खेलने का मन करता है। छुट्टियों में सुबह-सुबह देर से उठने का मन करता है। छुट्टियों में क्रिकेट खेलने का मन करता है। छुट्टियों में कहीं दूर जाने का मन करता है। एक बार में छुट्टियों में दिल्ली जा रखा था। वहाँ मुझे बहुत मज़ा आया पर जब मैं दिल्ली से घर आया तो मैंने अपना गृह कार्य नहीं किया और दूसरे दिन स्कूल खुलने वाला था। मैं स्कूल गया। मैंने स्कूल में अपने सभी टीचरों की डाँट खाई। मैं बहुत नाराज़ हुआ। इस कारण से तब से मुझे गृह कार्य से नफरत है लेकिन छुट्टियों में बहुत मज़ा आता है। छुट्टियों में अपने दोस्तों के साथ बैठकर आइसक्रीम खाने में क्या मज़ा आता है।

अंशुल, सातवीं, रा.इ.का.खरसाड़ा, पालकोट, टिहरी, गढ़वाल

एक नदी की 'खोज'

युगाण्डा देश के मिल्टन अलीमाडी ने कुछ ही दिनों पहले लन्दन शहर में एक नदी की 'खोज' की। इस नदी का नाम उन्होंने गुलु रखा। इस खबर को देखकर दुनिया भर में लोग हँसने लगे। वह इसलिए कि मिल्टन यूरोप के उपनिवेशियों की सदियों पुरानी एक आदत का मज़ाक उड़ा रहे थे। अफ्रीका, एशिया या अमेरिका के किसी देश में कदम रखते ही वे वहाँ की नदियों, शहरों, गाँवों, पहाड़ियों, पेड़-पौधों की खोज कर उनका नामकरण कर देते; जैसे कि उनके आने से पहले वहाँ के लोग इन नदियों, शहरों वगैरह से अनजान हों। मिल्टन ने हमें हँसाया तो है, लेकिन साथ ही शर्मिन्दा भी किया है।

जहाँ माँ-बाप बच्चों पर चिल्लाते नहीं हैं

ग्रीनलैण्ड, अलास्का और कैनेडा के बर्फीली इलाकों में इन्युई लोग रहते हैं। इनकी एक ख़ास बात है कि यह अपने बच्चों पर चिल्लाते नहीं हैं, कभी नहीं। इनकी ज़िन्दगी में गुस्से के लिए कोई जगह नहीं है। ये गुस्से को अहमियत नहीं देते, लेकिन उसे व्यक्त करने और मन की भड़ास निकालने को ज़रूरी समझते हैं। इसका नतीजा यह है कि बच्चे भी शान्ति से अपनी बात रखना सीखते हैं और परिवार और समाज में काफी शान्ति बनी रहती है। सोचो, अगर हमारे घरों, स्कूल व मोहल्लों में झगड़ा-लड़ाई बहुत कम हो, तो कैसा रहे।

कॉमीडियन बने राष्ट्रपति

तीन साल पहले वोलडीमेर ज़िलैन्सकी नामक हास्य कलाकार का टीवी पर एक धारावाहिक शुरू हुआ। इसमें उन्होंने एक टीचर का किरदार निभाया था, जो इत्तेफाक से देश के राष्ट्रपति बन जाते हैं। ज़िलैन्सकी के जीवन में भी कुछ ऐसा ही हुआ है। हाल ही में वे पूर्वी यूरोप के यूक्रेन देश के राष्ट्रपति चुने गए। ज़िलेन्सकी एक दिलकश और मज़ेदार इन्सान हैं और उनके चुनाव में सोशियल मीडिया की काफी भूमिका रही है।

ज़िलैन्सकी को राजनीति का कोई अनुभव नहीं है और उन्होंने अपने आप को समझदार लोगों से घेर लिया है। देखते हैं कि यूक्रेन के लोगों की वे कितनी सेवा कर पाते हैं।

जब परछाई भी तुम्हारा साथ न दे

संजय तिवारी

आमतौर पर कहा जाता है कि परछाई कभी भी हमारा पीछा नहीं छोड़ती, लेकिन यह सही नहीं है। साल में दो दिन ऐसे होते हैं जब परछाई कुछ पल के लिए हमारा साथ छोड़ देती है। खगोल विज्ञानी इस घटना को ज़ीरो शैडो डे (शून्य छाया दिवस) कहते है। ज़ीरो शैडो डे पर ऐसा लगता है कि हमारी छाया एकदम गायब हो गई है, लेकिन होता यह है कि वह कुछ समय के लिए इतनी छोटी हो जाती है कि वह ठीक हमारे पैरों तले बनती है। इस वजह से हमें दिखाई नहीं देती। अपनी जगह पर कूदकर देखोगे तो परछाई पैरों तले नज़र आएगी।

सूरज की किरणें और परछाई

तुमने देखा होगा कि सूर्योदय के समय हमारी परछाई सबसे लम्बी होती है। जैसे-जैसे सूरज आकाश में चढ़ता जाता है परछाई छोटी होती जाती है। ठीक दोपहर (मध्याह्न) के समय हमारी परछाई सबसे छोटी होगी। मध्याह्न के बाद परछाई फिर बढ़ने लगती है और शाम में सूर्यास्त तक सबसे लम्बी हो जाती है। क्या तुम्हें पता है कि साल में दो ऐसे दिन हैं जब हमारी परछाई इतनी छोटी हो जाती है कि दिखती ही नहीं है, यानी कि गायब हो जाती है?

ये वो दिन हैं जब सूरज की किरणें धरातल पर सीधी पड़ती हैं। इन्हें लम्बवत (vertical) किरणें कहते हैं (चित्र 1)। सूरज की लम्बवत किरणें सभी जगहों पर एक ही समय पर नहीं पड़ती हैं। और कुछ जगहों पर तो यह किरणें बिलकुल ही नहीं पड़तीं। सूरज की लम्बवत किरणें तुम पर किन दिनों पड़ेंगी यह इस पर निर्भर है कि तुम कर्क रेखा और मकर रेखा के बीच कहाँ स्थित हो, यानी कि तुम किस अक्षांश पर हो। यदि तुम कर्क रेखा के उत्तर और मकर रेखा के दक्षिण में रहते हो, तो तुम्हारी परछाई सही में तुम्हारा साथ कभी नहीं छोड़ेगी।

चलो करते हैं तहकीकात

तो शुरू करते हैं भूमध्य रेखा से। भूमध्य रेखा पर 21 मार्च और 23 सितम्बर को सूरज की लम्बवत किरणें पड़ती हैं (चित्र 1)। इन दो दिनों में सूरज ठीक हमारे सिर के ऊपर यानी 90 डिग्री के कोण पर होगा। अगर तुम इन दो दिनों में भूमध्य रेखा पर रहो, तो मध्याह्न में तुम्हारी परछाई गायब हो जाएगी। इन दो दिनों में पूरी पृथ्वी पर दिन और रात की लम्बाई भी लगभग बराबर होती है।

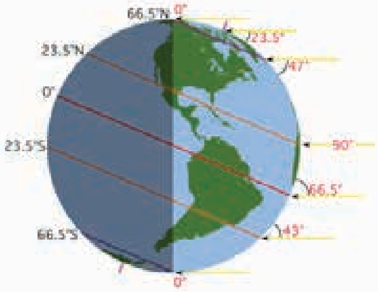

22 मार्च से आकाश में सूरज हर रोज़ उत्तर की ओर थोड़ा ज़्यादा खसकता है। यह सूरज के उत्तरायण का एक हिस्सा है। यहाँ बता दें कि सूरज तो एक ही जगह रहता है लेकिन पृथ्वी की गति के कारण हमें ऐसा लगता है कि आकाश में सूरज गति कर रहा है। ऐसे होते-होते 21 जून को वो आकाश में सबसे उत्तर बिन्दु पर होता है। इस दिन को समर सॉल्सटिस भी कहते हैं (चित्र 2)। भारत के कई शहर और गाँव भूमध्यरेखा से कर्क रेखा के मध्य स्थित है जहाँ शून्य परछाई बनती है। इन जगहों पर गर्मी भी अमूमन ज़्यादा पड़ती है। इस दौरान रात की लम्बाई कम होती है और दिन की लम्बाई ज़्यादा।

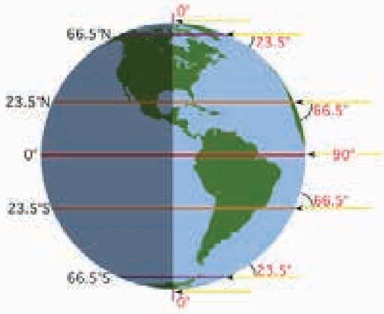

22 जून से सूरज रोज़ आकाश में दक्षिण की ओर खसकता नज़र आता है। यह सूरज का दक्षिणायण कहलाता है। कर्क रेखा से भूमध्य रेखा की ओर आते

समय फिर सूरज की लम्बवत किरणें उन सभी अक्षांशों पर पड़ती हैं। इससे दुबारा उन्हीं जगहों पर शून्य परछाई बनती है। और 21 सितम्बर को भूमध्य रेखा पर फिर से उसकी लम्बवत किरणें पड़ती हैं। इसके बाद भी आकाश में सूरज रोज़ दक्षिण की तरफ सफर करता रहता है। इस दौरान दक्षिणी गोलार्ध में रातें छोटी और दिन लम्बे होते हैं। और फिर 22 दिसम्बर को सूरज की लम्बवत किरणें मकर रेखा पर चमकती हैं। यह दिन उत्तरी गोलार्ध के लिए विन्टर सॉल्सटिस होता है और दक्षिणी गोलार्ध के लिए समर सॉल्सटिस। दक्षिणी गोलार्ध में यह साल का सबसे लम्बा दिन होता है और उत्तरी गोलार्ध में साल का सबसे छोटा दिन।

23 दिसम्बर से सूरज का उत्तरायण फिर शुरू हो जाता है और 21 मार्च तक उसकी लम्बवत किरणें फिर भूमध्य रेखा पर चमकती हैं।

कब होता है शून्य परछाई दिवस ?

साल भर में सूरज उत्तरी गोलार्ध में कर्क रेखा से लेकर दक्षिणी गोलार्ध में मकर रेखा तक अलग-अलग तारीखों में आकाश में गमन करता नज़र आता है। इस गमन के दौरान सूरज प्रत्येक अक्षांश से गुज़रता है। जिन अक्षांश पर सूरज की लम्बवत किरणें जिस दिन पड़ती है उस दिन वहाँ शून्य परछाई बनती है और शून्य परछाई दिवस मनाया जाता है।

तुम्हारा सवाल हो सकता है कि कर्क रेखा से उत्तरी ध्रुव तक और मकर रेखा से दक्षिणी ध्रुव तक की जगहों पर शून्य परछाई दिवस कब मनाया जाता है? जवाब होगा, क्योंकि इन जगहों पर साल भर सूरज की किरणें तिरछी पड़ती हैं इसलिए यहाँ कभी भी शून्य परछाई दिवस नहीं होता। भारत के कई ऐसे इलाके हैं जो कर्क रेखा के उत्तर में है और जहाँ परछाई सदा साथ ही रहती है। कर्क और मकर रेखा पर एक दिन और इन रेखाओं के बीच दो दिन शून्य परछाई दिवस होता है।

तुम्हारे शहर या गाँव में शून्य परछाई दिवस कब होगा?

हम आसानी से पता कर सकते हैं कि तुम जिस जगह पर हो वहाँ शून्य परछाई दिवस कब मनाया जाएगा। बस तुम्हें अपनी जगह का अक्षांश मालूम होना चाहिए। जब पता चल जाए तो तालिका में देखकर पता कर लेना कि तुम्हारी परछाई लगभग किस दिन तुम्हारा साथ छोड़ देगी।

इस तरह से सूरज की यात्रा का अवलोकन कर हम अपनी जगह का शून्य परछाई दिवस ज्ञात कर सकते हैं। हाँ, अगर तुम कर्क रेखा के उत्तर में रहते हो, यानी कि 23.5 डिग्री से भी ज़्यादा है तुम्हारा अक्षांश, तो समझ लो कि तुम्हारी परछाई साल भर तुम्हारे साथ ही रहेगी।

इस तालिका (चित्र) के आँकड़े आलोक मण्डवगणे के एण्ड्रॉइड मोबाइल के लिए बनाए गए ऐप से लिए गए हैं। दिए गए अक्षांश के आसपास जाने-माने शहरों के नाम हैं, ये उन शहरों के अक्षांश नहीं हैं।

अक्षांश	आसपास का शहर	ज़ीरो शैडो डे की तारीखें
8°N	कन्याकुमारी	10 अप्रैल/ 1 सितम्बर
9°N	शेनकोट्टई	12 अप्रैल/ 30 अगस्त
10°N	कोची, मुन्नार	15 अप्रैल/ 27 अगस्त
11°N	कोयम्बतूर	18 अप्रैल/ 24 अगस्त
12°N	ऑरोविल	21 अप्रैल/ 21 अगस्त
13°N	बेंगलूरु	24 अप्रैल/ 18 अगस्त
14°N	शिवमोग्गा	27 अप्रैल/ 15 अगस्त
15°N	कारवार	30 अप्रैल/ 20 अगस्त
16°N	आइहोले	4 मई/ 8 अगस्त
17°N	रत्नागिरी	7 मई/ 5 अगस्त
18°N	वारंगल, तुलजापुर	12 मई/ 31 जुलाई
19°N	मुम्बई	15 मई/ 26 जुलाई
20°N	वड़गाँव	20 मई/ 23 जुलाई
21°N	भुसावल, राजनांदगाँव	25 मई/ 18 जुलाई
22°N	बड़वानी	31 मई/ 12 जुलाई
23°N	अहमदाबाद	10 जून/ 2 जुलाई
23.5°N	विदिशा	21 जून

मन का ठेला

मधु धुर्वे
चित्र: शर्वरी देशपाण्डे

मन का ठेला बीच सड़क पर तेज़ी-से भाग रहा था। शाम को नहीं, रात को नहीं, सुबह के 5 बजे, खाली सूनी सड़क पर दौड़ रहा था। 13 साल का मन अपने ठेले को ज़ोर-ज़ोर से चलाते हुए, गाना गाते हुए मण्डी जा रहा था। मण्डी में आज काफी भीड़ थी। मन अपने ठेले को एक ट्रक की जगह पर लगाकर, केले की गाड़ी ढूँढने लगा। अच्छे और ताज़े केलों को ढूँढने के चक्कर में मन अपना ठेला भूलकर दूर बड़े-बड़े ट्रकों के पास चला गया। मन को आखिर अच्छे और ताज़े केले की एक गाड़ी दिख ही गई। मन ने केले बेचने वाले आदमी से अपनी बात पक्की की। और भीड़भाड़ वाले मण्डी-बाज़ार को देखते हुए, खुश होते हुए वापस अपने ठेले की ओर जाने लगा।

मन को उस जगह पर ठेला नहीं दिखा। मन ने मन में सोचा कि मैं तो ट्रक नहीं लाया था। मेरा ठेला ट्रक कैसे बन गया? इतनी जल्दी बड़ा कैसे हुआ? मन इस तरह सोचकर अकेले में ही मुस्कराने लगा, जब उसे ठेले का आधा हिस्सा ट्रक के पीछे दिखा। मन घबराते हुए ट्रक के पीछे गया। मन के मुँह से एक बून्द आवाज़ नहीं निकली, आँखों से आँसू निकलने लगे। मन का ठेला टूट चुका था। उसका कुछ हिस्सा ट्रक के बड़े चक्के के नीचे दब गया था।

ट्रक की हालत देखकर उस ट्रक के मालिक का पता चल रहा था। मन इसलिए चुप और दुखी होकर अपना ठेला निकालने लगा। एक आदमी ने अचानक मन की ओर देखा। उसे लगा कि मन चोरी कर रहा है। दूर से ही चिल्लाते हुए वह ट्रक के पास आया। मन का मुँह देखकर उसने डाँटना-चिल्लाना बन्द करके, प्यार से पूछा, “बेटा तुम यहाँ क्या कर रहे हो?” मन ने धीमी आवाज़ से बोलते हुए कहा, “मैं यहाँ रोज़ केला खरीदने आता हूँ। आज जब मैं अपना ठेला इस जगह पर लगाकर केले की तलाश में मण्डी के अन्दर वाले हिस्से में चला गया था, तब इस ट्रक वाले आदमी ने मेरा ठेला तोड़ दिया।” इतना सब बताने के बाद उस आदमी ने ठेला निकालने में मन की मदद की। ट्रक से जैसे-तैसे ठेला निकालकर, मन सड़क पर वापस आ गया और उदास शक्ल लेकर घर की ओर जाने लगा। ठेले की हालत देखकर मन का मन उदास था।

जिन पैसों से वह केला खरीदने वाला था, आज उन्हीं पैसों से उसे ठेला ठीक करवाना पड़ेगा। मण्डी से दूर निकल आने के बाद सड़क के किनारे गाड़ीये लोहार की एक ही झुग्गी थी जिसकी दुकान चालू हो चुकी थी। धुआँ, गरम कोयला, उसके साथ लाल गरम लोहा। इन सबको देखकर, मन ने अपना मन सँभाला और लोहार से अपने ठेले को ठीक करने की बात की। लोहार मान गया और उसने अपने औजारों से मन का ठेला एकदम ठीक कर दिया। इस काम में कम से कम दो घण्टे लगे। तब जाकर मन खुश हुआ। मन का ठेला

पहले से काफी बेहतर और मज़बूत हो गया था। मन ने लोहार को खुशी-खुशी पैसे दिए और वापस गाना गाते हुए घर की ओर बढ़ गया।

जाते-जाते मन को एक किराने की दुकान वाले ने आवाज़ देकर बुलाया... “ओए! ठेले वाले, इधर आओ। क्या तुम मेरी कुछ बोरियों को मण्डी तक लेकर जाओगे?” “हाँ,” मन ने कहा। “मगर मेरी भी बात सुन लीजिए, जितना पैसा आप ऑटो वाले को देने वाले थे उतना ही पैसा मुझे भी देना पड़ेगा। बोलो, आपको मंज़ूर है तो करता हूँ।” दुकान वाले को अपना सामान जल्दी भेजना था। इसलिए वह मन की बात मान गया और पाँच बोरियाँ मन के ठेले पर लाद दीं।

मन ठेला धकाते हुए वापस मण्डी चला गया। काम मिलने से मन खुश था क्योंकि ठेले को ठीक करवाने के बाद उसके पास एक भी पैसा नहीं बचा था। मन जैसे-तैसे समय पर मण्डी पहुँचा और बोरियाँ उतारकर झट से उसने पैसे लिए। कुछ पैसे उसने सुबह के केले खरीदने के लिए बचाकर रखे। फिर मण्डी से खाने-पीने का सामान खाते हुए, खरीदते हुए, ठेले के साथ मस्ती करते हुए वापस घर आ गया।

जीवन का पेड़

पता है...

फिग समूह के फूल अन्य फूलों की तरह नहीं दिखते। फिग यानी कि *फाइकस* जाति की विभिन्न प्रजातियाँ जैसे गूलर, बरगद, पीपल, अंजीर इत्यादि। अँग्रेज़ी में इन पेड़ों के नन्हे हरे फलों को भी 'फिग' कहा जाता है। ये 'फल' असल में फूलों के गुच्छे होते हैं। फूल इनके अन्दर होते हैं।

इन फलों के अन्दर एक छोटा-सा छेद होता है। इसके ज़रिए परागण करनेवाली मादा ततैया फल में प्रवेश करती हैं। एक बार परागण हो जाने के बाद, नन्हे 'फिग' फल में बदल जाते हैं। पके हुए फल जानवरों के बीच बहुत लोकप्रिय हैं। अलग-अलग तरह के पक्षी, फल खानेवाले चमगादड़, बन्दर, गिलहरियाँ व कीट इन पर अपनी दावत करते हैं।

फील्ड डायरी के लिए

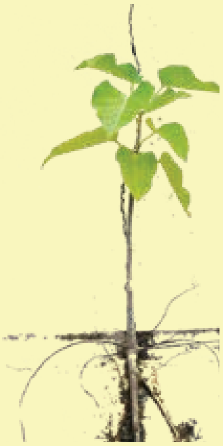

किसी भी एक को ढूँढो

सबसे पहले तो बरगद, पीपल या गूलर में से किसी का भी एक पेड़ ढूँढ लो। तुम्हें ये सड़क के किनारे उगे हुए, किसी दूसरे पेड़ से लिपटे हुए या किसी पुरानी दीवार या इमारत की दरार से बाहर बढ़ते हुए मिल जाएँगे।

ध्यान से देखो

पेड़ कितना ऊँचा है? किसी इमारत की पहली मंज़िल के बराबर, बिजली के किसी खम्भे के बराबर या इससे भी ज़्यादा?

उसकी शाखाएँ कितनी दूर तक फैली हैं? क्या उसमें लटकती हुई जड़ें हैं? यदि हाँ, तो उनमें से कितनी जड़ें ज़मीन तक पहुँचती हैं?

एक पत्ती लो

अपनी फील्ड डायरी में इस पत्ती की आउटलाइन का नक्शा खींच लो।

nature conservation foundation
science for conservation

आराम से बैठो

पेड़ के नीचे किसी एक जगह पर आराम से बैठ जाओ। अब ऊपर देखो और पेड़ पर आनेवाले मेहमानों पर नज़र रखने की कोशिश करो। तुमने कितने अलग-अलग तरह के कीटों, पक्षियों और अन्य मेहमानों को अपने इस पेड़ पर आते हुए देखा?

यदि पेड़ पर कुछ फल लगे हों, तो हो सकता है कि कुछ फल ज़मीन पर गिरे मिल जाएँ। इनमें से एक फल लो, उसे खोलो और अन्दर देखो। तुमने जो भी देखा, उसके बारे में चित्र बनाओ और लिखो।

प्रतियोगिता

'फिग' समूह के पेड़ों के बारे में सदियों से कहानियाँ कहीं जाती आ रही हैं। बरगद या पीपल के पेड़ से जुड़ी ऐसी ही किसी कहानी के बारे में अपने घर के किसी बड़े व्यक्ति या अपने दोस्तों से पूछो।

अपनी सुनी कहानियाँ हमें chakmak@eklavya.in पर भेजो और भारतीय पेड़ों पर एक किताब जीतने का मौका पाओ।

अनुवाद: कविता तिवारी

हमारे आसपास के फिग...

दुनिया भर में पाए जाने वाले फिग समूह के पेड़ों की 850 प्रजातियों में 89 प्रजातियाँ भारत में पाई जाती हैं। कुछ आम उदाहरण हैं: बरगद, पीपल, गूलर और रबर का पेड़।

पीपल का पेड़
फाइकस रेलिजियोसा

तुम भी बनाओ

बाघ

जुगाड़ - ओरिगामी कागज़ या कोई भी चौकोर कागज़, मार्कर या स्केच पैन

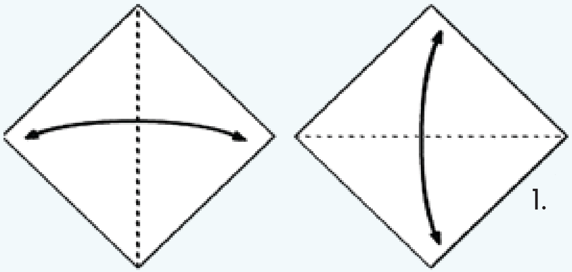

1. पेपर को तिरछा कर आधे में मोड़ो।

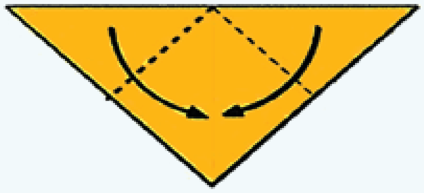

2. दोनों कोनों को बीच तक लाकर मोड़ दो।

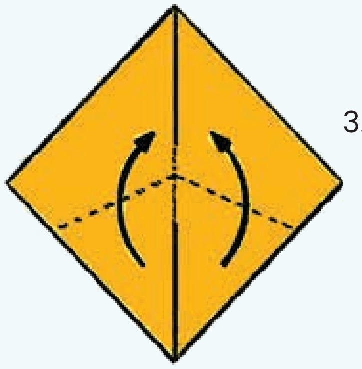

3. जो कोने अभी मोड़े हैं, उनको ऊपर की ओर मोड़ना है। मदद के लिए चित्र देखो।

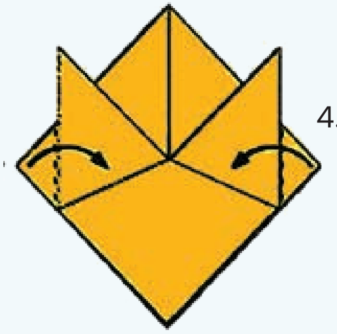

4. दोनों तरफ जो छोटे कोने बचे होंगे उनको अन्दर की तरफ मोड़ लो।

5. ऊपर जो एक कोना दिख रहा है उसे भी अन्दर की तरफ मोड़ लो।

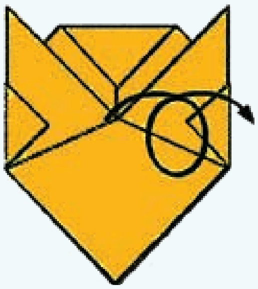

6. अब जो चेहरा बनाया है उसे पलटो। आगे, निचले भाग में जो कोना दिख रहा है, उसका ऊपरी हिस्सा थोड़ा-सा ऊपर की ओर मोड़ दो। इस मोड़े हुए भाग के ऊपरी कोने का छोटा-सा भाग आगे की ओर मोड़ दो ताकि नाक बन जाए।

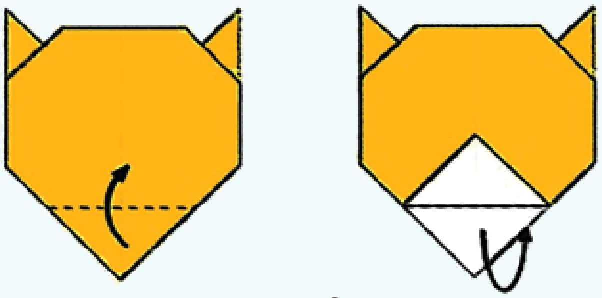

7. निचले भाग को पीछे की ओर मोड़ दो।

8. मार्कर या स्केच पैन की मदद से इसकी आँखें, कान, नाक, मूँछ और बाघ के शरीर की धारियाँ बना लो।

भाग - 4

गोपी गवैया बाघा बजैया

उपेन्द्रकिशोर रायचौधरी
अनुवाद: लाल्टू
चित्र: शिवात्मिका लाला

अभी तक तुमने पढ़ा -

गोपी और बाघा के गाने-बजाने से परेशान गाँववाले उन्हें गाँव से निकाल देते हैं। जंगल में दोनों की मुलाकात होती है। महाराज को अपना गाना-बजाना सुनाने निकले गोपी-बाघा को रास्ते में भूतों की टोली मिलती है, जो उन्हें एक जादुई थैली और दो जोड़ी जादुई जूते ईनाम में देती है। जूतों की मदद से दोनों सीधे महाराज के कमरे में पहुँच जाते हैं और पकड़े जाने पर कारागार से भी भाग निकलते हैं। फिर थैली से राजसी कपड़े माँगकर, पहनकर राजबाड़ी पहुँच जाते हैं। जहाँ महाराज दोनों को दूसरे देश का राजा समझ लेते हैं।

अब आगे...

गोपी ने सच ही कहा था, पर राजा को इस पर यकीन न हुआ। उन्होंने सोचा, "कितने अच्छे लोग हैं, कैसी नम्रतापूर्वक बातें करते हैं। जितने बड़े राजा हैं, उतने ही शरीफ भी हैं।" उस वक्त अधिक कुछ न कहकर उन दोनों को वे सभा में ले आए। उस दिन वहाँ उन दोनों लोगों को सज़ा सुनाई जानी थी, तीन दिन पहले जो उनके सोने के कमरे में घुस गए थे। अदालत का समय हो गया, उन दो असामियों को लाने प्यादे भेजे गए। पर उनको वे अब कहाँ ढूँढें? इन तीन दिनों तक उनके कमरे पर ताला लगा हुआ था। जब ताला खोला गया तो देखा गया कि वहाँ कोई नहीं है, खाली कमरा पड़ा हुआ है।

तब ज़बर्दस्त दौड़धूप और अफरा-तफरी शुरू हो गई। दारोगाजी बड़े परेशान होकर प्यादों को डाँटने लगे। प्यादों ने हाथ जोड़कर कहा, "हुज़ूर ! हमारा कोई कसूर नहीं, हम लोगों ने ताला लगाकर रखा था, इसके अलावा शुरू से दरवाज़े के सामने खड़े भी थे। वे दो लोग इन्सान तो थे नहीं, वे भूत थे; नहीं तो इसमें से निकलकर वे भागे कैसे?"

इस बात पर सबको यकीन हुआ। पहले महाराज भी दारोगा पर बिगड़कर उसका गला ही कटवा देने को थे, पर अन्त में यह बात सुनकर बोले, "हाँ, वे लोग ज़रूर भूत ही थे। मेरा कमरा भी तो बन्द था, उसमें इतना बड़ा ढोल लेकर कैसे आए।"

यह सुनकर सबने कहा, "हाँ, हाँ, ठीक, ठीक, वे दोनों भूत थे !" कहते-कहते उनके शरीर काँपने लगे। बदन से पसीना बहने लगा। तब बाघा के उस ढोल की बात याद कर वे बोले, "महाराज ! भूत का ढोल बड़ी खतरनाक चीज़ है। उसे कभी भी अपने कमरे में न रखें। उसे अभी जला दीजिए।"

महाराज भी बोले, "बाप रे! भूत का ढोल कमरे में पड़ा है? तुरन्त उसे जला दो।"

महाराज ने जैसे ही यह बात कही, तुरन्त बाघा हाथों से दोनों आँखें ढँक, "आय-हाय-हाय-आय" चीखकर रोते-रोते लोटपोट होने लगा।

इसके बाद बड़े सम्मान के साथ उसे अपने कमरे में लिटा आए। गोपी उसके पास बैठकर पट्टी पर हवा देने लगा।

फिर जब सब कमरे से निकल गए तो गोपी ने बाघा से कहा, "छि: भैया, जहाँ-तहाँ इस तरह नहीं रोना चाहिए! अब सोचो ज़रा, कैसी मुसीबत आ गई।" बाघा बोला, "अगर मैं न रोता, तो अब तक मेरे ढोल को जलाकर खतम कर दिया होता। अब थोड़ी-बहुत तकलीफ ज़रूर हो रही है, पर मेरा ढोल तो बच गया!"

बाघा और गोपी इस तरह आपस में बातचीत कर रहे थे। इसी बीच महाराज जब सभा में वापस लौट आए तो दारोगाजी ने उनके कानों में धीरे-से कहा, "महाराज, एक बात है, अगर इजाज़त हो तो बतलाऊँ।" राजा बोले, "कैसी बात?" दारोगा बोले, "वह जो आदमी लोट-पोट होकर रो रहा था, वह और उसका साथी वह दूसरा, ये वही दो भूत हैं; मैं उन्हें पहचान गया हूँ।" राजा बोले, "अरे हाँ, मुझे भी कुछ ऐसा ही लग रहा था। यह तो बड़ी मुसीबत आ खड़ी हुई। अब बतलाओ कि क्या किया जाए?"

तब इस बात पर सभा में ज़ोर-से कानाफूसी शुरू हो गई। किसी ने कहा, "ओझा बुलाओ जो उन दोनों को भगा दे।" एक और कोई बोला, "ओझा अगर इन्हें भगा न पाए, तब ये दोनों बिगड़कर भयंकर कुछ कर बैठेंगे। इससे बेहतर तो यह होगा कि रात को जब वे सो रहे हों तो उन्हें जलाकर मार दीजिए।"

उस दिन बाघा को सँभालने में गोपी को बड़ी दिक्कत हुई। ढोल जलाने की बात होते ही बाघा ने रोना शुरू कर दिया, अगर वे ढोल को लाकर उसमें आग लगा ही डालें, तो पता नहीं वह क्या कर बैठेगा! तब इस बात को बाघा छिपाएगा कैसे कि वह ढोल उसी का है? कैसी आफत है ! अब शायद पकड़े ही जाएँ और जान खो बैठें।

गोपी की बड़ी इच्छा थी कि वह बाघा को लेकर दौड़ भागे। पर अब तो ऐसा सम्भव ही नहीं था, सभा में बैठते वक्त उन जूतों को तो पैरों से उतारकर रखना पड़ा था।

इसी बीच बाघा की यह हालत देखकर सभा में ज़बर्दस्त अफरा-तफरी शुरू हो गई। सबने सोचा, बाघा को कोई गम्भीर बीमारी हो गई होगी, अब वह और जी नहीं सकता। राजबाड़ी के वैद्यजी आकर बाघा की नब्ज़ थामकर बेहद चिन्ता के साथ सिर हिलाने लगे। बाघा को बहुत सारी जुलाब की दवाएँ खिलाकर पेट पर पट्टी लगा दी गई। इसके बाद वैद्यजी ने कहा कि, "अगर इस पर भी दर्द नहीं रुकता, तो पीठ पर एक और, उससे भी न हो तो दोनों ओर दो पट्टियाँ लगानी होंगी।"

यह बात सुनते ही बाघा का रोना तुरन्त रुक गया। तब सबने सोचा कि वैद्यजी ने कितनी बढ़िया दवा दी है, दवा देते ही दर्द खतम हो गया।

खैर, बाघा ने देखा कि उसके रोने से ढोल को जला देने की बात अब दब गई है, तब उस पट्टी की मुसीबत झेलते हुए भी उसका मन कुछ हद तक शान्त हुआ। महाराज

यह बात सबको जँच गई, पर इसमें मुसीबत यह आई कि भूतों को जलाया जाए तो राजबाड़ी में भी आग लग सकती है। अन्त में बहुत सोच-विचार के बाद यह तय हुआ कि एक बागानबाड़ी में उन्हें रहने को कहा जाए - बागानबाड़ी अगर जल भी जाए तो कोई खास नुकसान न होगा। तब महाराज बोले कि, "उस ढोल को भी फिर इस बागानबाड़ी में रख दिया जाए; जब बागानबाड़ी को जलाया जायेगा, तो एक साथ सारी परेशानियाँ खतम हो जाएँगी।

बागानबाड़ी में जाने की बात सुन गोपी और बाघा बहुत खुश हुए। उन्हें तो कुछ पता न था कि इसमें कितना भयंकर फन्दा है; उन बेचारों ने सोचा कि चलो आराम से एकान्त में रहेंगे, संगीत-चर्चा भी ढंग से होगी। जगह बड़ी निर्जन और सुन्दर थी। मकान लकड़ी का था, पर देखने में बढ़िया था। वहाँ पहुँचकर देखते-ताकते बाघा की तबियत सुधर गई। तब गोपी ने उससे कहा, "भाई, अब और यहाँ रहकर क्या करें? चलो हम लोग यहाँ से चले जाएँ।" बाघा बोला, "भैया, ऐसी सुन्दर जगह में रहने की किस्मत तो हमारी नहीं है, क्यों न दो दिन ठहर ही जाएँ। आह! अगर मेरा ढोलक पास होता!"

उस दिन बाघा घर में इस कमरे से उस कमरे में टहल रहा था, गोपी बगीचे में एक जगह बैठकर गुनगुना रहा था, अचानक बाघा जोरों-से चिल्ला उठा। उसकी बातें पूरी समझ में नहीं आईं, केवल, "गोपी भैया ! ओ गोपी भैया" पुकार खूब सुनाई पड़ने लगी। तब दौड़कर आकर गोपी ने देखा कि बाघा अपना वह ढोल सिर पर लिए पागलों-सा नाच रहा था, और अंट-संट, अनाप-शनाप बोलते हुए "गोपी भैया, गोपी भैया" कहकर चीख रहा था। ढोल वापस पाकर उसे इतनी खुशी मिली कि वह आराम से खड़ा नहीं हो पा रहा था, ढंग से बात भी नहीं कर पा रहा था। इस तरह करीब आधा घण्टा हो जाने पर बाघा ने ज़रा शान्त होकर कहा, "गोपी भैया, देखा तुमने – इस कमरे में मेरा ढोलक – अरे मज़ा आ गया – हा: हा: हा:," कहकर दस मिनटों तक वह खूब नाचता रहा। इसके बाद उसने कहा, " भैया, इतनी तकलीफ के बाद यह ढोलक मिला है, एक गाना गाओ, ज़रा मज़ा लें।" गोपी बोला, "इस वक्त बड़ी भूख लगी है।" खाना-पीना हो जाए, फिर रात को बरामदे में बैठकर दोनों खूब गाएँगे-बजाएँगे।"

इधर महाराज ने तय किया था कि उस रात उनको जला मारेंगे। दारोगा को आदेश दिया गया था कि उस शाम उस बागानबाड़ी में एक विशाल भोज का बन्दोबस्त करना होगा। दारोगा जी पचास-साठ लोगों के साथ भोज में मौजूद रहेंगे। खा-पीकर गोपी और बाघा जब सो जाएँगे, तब वे सब मिलकर एक साथ उस लकड़ी के मकान को चारों ओर से आग लगाकर उनके भागने का रास्ता बन्द कर देंगे।

जारी...

साँगानेरी ब्लॉक प्रिंट

शिवनारायण गौर

साँगानेर शायद यह नाम तुम्हें कुछ जाना-पहचाना लग रहा होगा। हाँ, हम उसी साँगानेर की बात कर रहे हैं जिसकी चादरें, साड़ियाँ और अन्य कपड़े साँगानेरी ब्लॉक प्रिंट के नाम से मशहूर हैं। रंग-बिरंगे ये कपड़े ना केवल भारत भर में जाते हैं बल्कि दुनिया के कई देशों में निर्यात भी होते हैं।

राजस्थान सदियों से कपड़ों की ब्लॉक प्रिंटिंग के लिए जाना जाता है। इसी राजस्थान की राजधानी जयपुर का एक छोटा-सा इलाका है साँगानेर। जैसे ही आप इस इलाके में पहुँचते हैं, तो हर जगह साँगानेरी कपड़ों की झलक दिखाई देती है। हाथों से की जाने वाली ब्लॉक प्रिंटिंग के अलावा यहाँ आजकल स्क्रीन प्रिंटिंग से भी खूब कपड़े तैयार किए जा रहे हैं।

चलो, हम यहाँ साँगानेर के ब्लॉक प्रिंटिंग के काम को समझने की कोशिश करते हैं। मुख्य मार्ग पर सजी-धजी दुकानों पर हमने कुछ कपड़े देखे और उनके तैयार होने की प्रक्रिया समझने के लिए कुछ घरों में गए। कई घरों में नीचे दुकानें हैं और घर के ऊपरी कमरों में कपड़े रंगने का काम होता है।

छपाई के लिए सफेद रंग का सादा कपड़ा राजस्थान के ही एक शहर अजमेर और कुछ अन्य जगहों से यहाँ आता है। सबसे पहला काम होता है कपड़े का डिज़ाइन तैयार करना। चूँकि साँगानेर की परम्परागत शैली खूब पसन्द की जाती है इसलिए कपड़े की रंगाई का पहला विकल्प परम्परागत शैली के चित्र ही होते हैं। इस शैली के चित्रों में छोटे-छोटे फूल होते हैं। कुछ जानवरों के चित्रों वाली प्रिंटिंग भी इस शैली का एक हिस्सा है।

डिज़ाइन पसन्द आ जाने के बाद दूसरा काम है रंग और प्रिंटिंग के लिए ब्लॉक तैयार करना। आमतौर पर ब्लॉक बनाने और प्रिंटिंग का काम करने वाले लोग अलग-अलग होते हैं। एक पूरा मोहल्ला है जिसमें ब्लॉक बनाने का काम लोग करते हैं। करीब 150 गुमठियाँ हैं जिन पर ब्लॉक बनाए जाते हैं। ब्लॉक बनाने के लिए शीशम की लकड़ियाँ काम में लाई जाती हैं। इसके लिए इमली की लकड़ी से बनी हथौड़ी का उपयोग हल्के हाथों से लिया जाता है। चूँकि शीशम की लकड़ी मज़बूत होती है इसलिए ब्लॉक के लिए इसका उपयोग किया जाता है। वहीं इमली की

लकड़ी मज़बूत होने के साथ ही लचीली भी होती है इसलिए हथौड़ी के लिए इसका उपयोग होता है। शीशम की लकड़ी पर हाथों से काटकर ब्लॉक बनाए जाते हैं। जिस लकड़ी के गुटके पर ब्लॉक बनाना होता है सबसे पहले उस पर खड़िया मिट्टी की पतली परत चढ़ाई जाती है। परत सूख जाने पर एक ट्रेसिंग पेपर की सहायता से लकड़ी की खड़िया मिट्टी वाली सतह पर डिज़ाइन को उकेरा जाता है। फिर ब्लॉक बनाने के लिए गुटके पर हल्के हाथों से कटाई की जाती है। ब्लॉक बनाने का काम बहुत सावधानी से किया जाने वाला काम है। यदि थोड़ा भी हाथ गलत चल गया तो समझो कि कई कपड़ों का डिज़ाइन ही बदल जाएगा।

रंग बनाने के लिए कुछ प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल होता है। रंग को पक्का करने के लिए गोंद का उपयोग करते हैं। रंग और ब्लॉक तैयार होने के बाद प्रिंटिंग का काम शुरू होता है। सफेद कपड़े को एक लम्बे टेबिल पर कसकर कुछ आलपिनों की मदद से लगाते हैं। बालटी में तैयार किए गए रंग को स्पंज की मदद से ब्लॉक पर लगाते हैं। और फिर हाथों से कपड़े पर प्रिंटिंग की जाती है। चूँकि ब्लॉक को हाथ से ठोकना पड़ता है इसलिए काम करने वालों के हाथों का निचला हिस्सा बहुत सख्त और कई बार रोगग्रस्त हो जाता है। जितने रंगों की छपाई होनी है उतनी बार ब्लॉक से कपड़े पर छपाई की जाती है। प्रिंटिंग का काम बहुत ही सावधानीपूर्वक करना होता है। एक रंग के ऊपर दूसरा रंग ना चढ़े इसका खास ध्यान रखा जाता है।

जब प्रिंटिंग का काम पूरा हो जाता है तो कपड़े को सुखाकर एसिड के पानी में डालते हैं। एसिड के पानी में डालने से एक तो रंग स्थाई हो जाता है दूसरा कपड़े का रंग निखरकर बदल जाता है। एसिड के पानी से निकालने के बाद कपड़े को बस सुखाया जाता है। और फिर विभिन्न आकारों में काटकर यह कपड़ा बिक्री के लिए तैयार हो जाता है। कुछ कपड़ा स्थानीय दुकानों पर और कुछ दुनिया के दूसरे देशों में भेज दिया जाता है।

1.ब्लॉक तैयार करना

2. रंग बनाने का काम

3. ब्लॉक की मदद से प्रिंटिंग करना

4. एसिड के पहले और बाद का कपड़ा

शिक्षक-प्रशिक्षक की भूमिका में अवसर

Azim Premji Foundation

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन विभिन्न राज्यों में अपने जिला संस्थानों में कार्य करने हेतु शिक्षक प्रशिक्षक पद के लिए आवेदन आमंत्रित कर रहा है।

शिक्षक प्रशिक्षक की भूमिका: सरकारी स्कूलों की प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओ में अध्यापन कर रहे शिक्षकों का सतत् क्षमता संवर्धन।

आवश्यक योग्यता: स्नातक / स्नातकोत्तर

अनुभव: किसी प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, महाविद्यालय या अन्य शिक्षण संस्थानों में कम से कम दो वर्ष के शिक्षण कार्य का अनुभव अनिवार्य।
नोट - पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त लोगों के लिए अनुभव आवश्यक नहीं है।

शिक्षा से जुड़ी गैर सरकारी संस्थाओं में कार्यानुभव रखने वाले व्यक्ति भी आवेदन कर सकते हैं। कम से कम दो वर्ष का फील्ड में कार्य करने का अनुभव आवश्यक।

चयन प्रक्रिया: लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार

परीक्षा तिथि: 23 जून और 21 जुलाई
इच्छुक अभ्यर्थी निम्न वेबलिंक पर अपना पंजीकरण (ऑनलाइन) कर सकते हैं।
https://bit.ly/2Mx2kwb

अधिक जानकारी के लिए https://azimpremjifoundation.org/career-list एवं टोल फ्री नंबर-18002740101 (सोमवार-शुक्रवार, 9 A.M. - 6 P.M.) पर संपर्क कर सकते हैं।

एक महल दिमाग में

सजिता नायर

चलो एक खेल खेला जाए। मान लो कि तुम अपने छोटे भाई-बहन से मिलने अपने मामा के घर जा रहे हो। तुम्हें रस्ते में खाने के लिए कुछ सामान खरीदने बाज़ार जाना है। साथ ही भाई-बहन के लिए दो खिलौने भी लेने हैं।

सामान की लिस्ट कुछ ऐसी है:

1. ब्रेड
2. चम्मच
3. प्लेट
4. तोता
5. हाथी

अब मान लो कि तुम्हारे पास कागज़-कलम नहीं हैं और तुम्हें यह लिस्ट याद करनी है। तो, पहले अपनी आँखें बन्द करो और सोचो कि तुम अपने घर के दरवाज़े के सामने खड़े हो। दरवाज़े को अच्छे से, बारीकी से देखो। अब दरवाज़े को खोल अन्दर कमरे में जाओ। पूरे कमरे को ध्यान से देखो और कोई 5 फर्नीचर चुनकर उन्हें अपने दिमाग में क्रम से सजा लो जैसे:

1. सोफा
2. टेबल
3. टीवी
4. शू रैक
5. फ्रिज

थोड़ा समय ले इन्हें याद कर लो।

अब सोचो कि सुबह का वक्त है और तुम सोफे पर बैठ कर आराम से ब्रेड खा रहे हो। ब्रेड पर जैम लगाने के लिए टेबल पर चम्मच रखी हुई है। अचानक से टीवी में तुम्हें खूबसूरत-सी एक प्लेट दिखती है। तुम सोचते हो क्यों न घरवालों को मनाकर ऐसी ही प्लेट ली जाए। फिर तुम्हारी नज़र शू रैक के ऊपर बैठे तोते पर जाती है और तुम्हें याद आता है कि मिट्ठू को प्लेट से खेलना कितना पसन्द है। तभी फ्रिज के ऊपर रखा तुम्हारा हाथी का अलार्म एकदम से बज उठता है।

इस कहानी का चित्र तुम जितनी बारीकियों से अपने दिमाग में बनाओगे, उतनी ही आसानी से तुम ऊपर दिए शब्दों को याद कर पाओगे।

एक पुरानी तकनीक

इस खेल को दरअसल 'मेमोरी पैलेस' या 'लोसाइ मेथड' के नाम से जाना जाता है। और यह सिर्फ खेल नहीं है, असल में यह चीज़ों को याद रखने का एक तरीका है। वर्षों पहले ग्रीस के लोगों ने यह तरीका निकाला, जो आज भी उतना ही कारगर है जितना कि तब था। यह उपाय उनको कैसे मिला इसके पीछे एक दिलचस्प कहानी है, जिसके बारे में रोम के लेखक चिचेरो ने अपनी किताब *दी ओरेटर* में लिखा है। इस किताब के मुताबिक़ 'मेमोरी पैलेस' की खोज ग्रीक कवि सिमोनिदेस ने की। दरअसल एक बार सिमोनिदेस को कुछ मशहूर लोगों की तरफदारी के लिए एक कविता पेश करने एक भोज में बुलाया गया। उनके कविता पढ़कर निकलने के थोड़ी ही देर बाद बैंक्वेट हॉल में बहुत बड़ा हादसा हुआ। इस हादसे में उनके साथ के बहुत से लोगों की जानें चली गईं। हादसा इतना भयंकर था कि वहाँ पर जितने लोग थे उनकी शक्ल पहचान में नहीं आ रही थी। सिमोनिदेस ने याद किया कि जब वे उपस्थित थे, तो कौन कहाँ बैठा था और इसके आधार पर लोगों की पहचान की गई। सिमोनिदेस को उस दिन यह बात समझ में आई कि अगर किसी को भी कई सारी चीज़ें याद रखनी हों तो उन्हें एक क्रम से याद करने में फायदा होगा। और इस तरह हुआ चीज़ों के ठिकाने को क्रम से याद रखने के इस तरीके का विकास।

मेमोरी पैलेस काम कैसे करता है?

मेमोरी पैलेस के लिए सबसे पहले ज़रूरी है दिमाग में एक पैलेस बनाना। ज़रूरी नहीं है कि यह एक महल ही हो। यह तुम्हारा घर हो सकता है या कोई और जानी-पहचानी जगह। अगर मन करे तो तुम अपना खुद का अनोखा खयाली घर भी बना सकते हो दिमाग में। घर सोच लेने के

बाद उसकी बारीकियों के बारे में सोचना। दीवारों का रंग - बाहर की दीवार का रंग, अन्दर की दीवार का रंग - दाग, दरारें, दरवाज़ा कैसा दिखेगा...। तुम चाहो तो एक कमरे का घर बना सकते हो, चाहे तो दो। यह आधारित होता है कि तुम्हें कितनी जानकारी अपने इस पैलेस में रखनी है। कमरे में रखी जानकारी के आधार पर तुम हरेक कमरे का नामांकन भी कर सकते हो।

कमरे सोच लेने के बाद अब उसके अन्दर से कुछ फर्नीचर को चुनना होगा और उन्हें संख्या देना होगी। ठीक वैसे ही जैसे अभी खेल में किया था। दरअसल फर्नीचर मदद करते हैं चीज़ों को उनसे जोड़कर एक बेहतर चित्र और कहानी बुनने में और कहानी याद करने पर हमें चीज़ें याद आ जाती हैं। बस ध्यान रहे कि एक फर्नीचर सिर्फ एक चीज़ के साथ ही जुड़ा हो। एक से ज़्यादा चीज़ें जोड़ने से हमें ही याद करने में परेशानी होगी।

कई लोग जिन्हें बहुत सारी जानकारी याद रखनी होती है वे या तो जानकारियों को दो-तीन घरों में बाँट देते हैं या फिर तीन से ज़्यादा घरों में बाँटकर छोटी कॉलोनी बसा लेते हैं।

मैमोरा पैलेस का इस्तेमाल कौन करता होगा?

मशहूर अमरीकी सीरियल 'द मेंटलिस्ट' में पैट्रिक ने अपने घर का मेमोरी पैलेस बनाया था, पर उसमें उसके घर के बाहर वाली सड़क भी उस पैलेस का हिस्सा थी। 'शर्लाक होल्म्स' दूसरे मशहूर किरदार हैं जो मेमोरी पैलेस का उपयोग करते हैं।

इस तरीके को सिर्फ काल्पनिक किरदार ही नहीं बल्कि हम-तुम भी इस्तेमाल करते हैं। वैसे आजकल हम लोगों को बहुत कम चीज़ों को याद रखने की ज़रूरत होती है। फोन नम्बर, दोस्तों का जन्मदिन, ज़रूरी तारीखें सब कुछ तो मोबाइल में देख लेते हैं। बहुत ही कम फोन नम्बर याद होंगे हमें। लेकिन कभी-कभी बहुत सारी चीज़ें याद रखनी ही पड़ती हैं, जैसे शतरंज सीखते समय कई बार चालों का एक लम्बा क्रम याद रखना पड़ता है; या फिर कोई नई भाषा सीख रहे हों तो उसका तो पूरा शब्दकोश याद करना पड़ता है, और कुछ लोगों को इस तरीके से काफी मदद मिली है।

इस तरीके का इस्तेमाल खेल में भी होता है। 1991 से 'वर्ल्ड मेमोरी चैंपियनशिप' की शुरुआत हुई जिसमें भाग लेने के लिए विश्व भर से लोग आते हैं। इस प्रतियोगिता के कई प्रतिभागी मेमोरी पैलेस का इस्तेमाल करके ही चीज़ों को याद करते हैं। उनके लिए इस पैलेस से छोटी से छोटी जानकारी निकालना आसान होता है क्योंकि वो अपने पैलेस के हरेक कोने से बहुत अच्छी तरह वाकिफ होते हैं। तुम्हें और मुझे इस स्तर तक पहुँचने में शायद थोड़ा समय लगे। इसके लिए हमें ज़्यादा कुछ नहीं करना, बस हर दिन अपने मेमोरी पैलेस को खोल उसका दौरा करना होगा। दौरा मतलब सिर्फ घूमना नहीं, बल्कि इस पैलेस के हरेक कोने और चीज़ों को बारीकी से देखना होगा।

रुको! जाने से पहले ये तो बताओ तुम्हें बाज़ार से क्या-क्या सामान लेना है?

अगर मज़ेदार लग रहा हो तो चलो कुछ और शब्द देती हूँ, इसे अपने मेमोरी पैलेस में जोड़कर देखो और बताओ मज़ा आया कि नहीं।

1. चिड़िया
2. घड़ी
3. बिल्ली
4. नाव
5. पुल

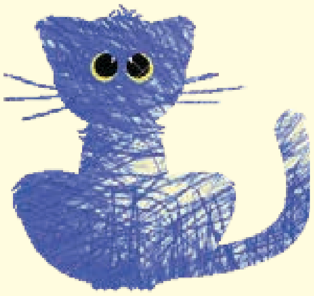

मेरा पन्ना

मेरे गाँव का हाल

ज्योति कुमारी, आठवीं, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सिकियाँ, सिवान जीरादेई, बिहार

आज मैं अपने गाँव सिकियाँ की बात कर रही हूँ। मेरे गाँव में बहुत-सी कठिनाइयाँ हैं। मेरे गाँव में सबके घर में शौचालय नहीं हैं। जिनके पास पैसे हैं वो तो बनवाने लगे हैं लेकिन जिसके पास पैसा नहीं है वो नहीं बनवा रहे हैं। गाँव के लोग आपस में झगड़ा करते रहते हैं, कभी सड़क को लेकर तो कभी ज़मीन को लेकर। अगर किसी का घर खेत या सभी घरों के बीच में है और अगर वो आदमी उनके घर की तरफ से जाएगा तो उसके लिए भी झगड़ा करते हैं कि यह मेरी ज़मीन है, मैं तुम्हें नहीं जाने दूँगा। मैं अपनी ज़मीन घिरवा दूँगा। किसी की ज़मीन में किसी की नाली बही तो उसके लिए भी झगड़ा। मेरे गाँव में सबके घर में सोख्ता भी नहीं है, सबका नाली का पानी इधर-उधर बहता है। ऐसी अनेक कठिनाइयाँ हैं मेरे गाँव में। पता नहीं कैसे ठीक होंगी ये?

चित्र: सताक्षी श्रीवास्तव, तीसरी, जिंगल बेल एकैडमी अयोध्या, उत्तर प्रदेश

चित्र: सुषमा, दसवीं, भिंताई, पौड़ी, उत्तराखण्ड

दोस्ती

अनाम, मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश

जब मैं 7 साल की थी, हमारा दोस्तों का एक ग्रुप हुआ करता था। ग्रुप में ही घूमने जाना, लकड़ी बीनना, एक साथ स्कूल जाना और यहाँ तक कि एक साथ मिलकर ही खाना खाना भी होता था। कभी स्कूल जाने का मन नहीं होता था तो सारे दोस्त छुट्टी मार के लकड़ी बीनने जाया करते थे और भूख लगने पर बिल्डिंग के लोगों से खाना माँगकर खाते थे। लकड़ी लेकर घर लौटते वक्त सड़क के कुत्ते भौंक-भौंक कर हम पे टूट पड़ते। कुत्तों से पीछा छुड़ा के घर की ओर भागते तो घर पहुँचने पर मम्मी-पापा की डाँट खाते। दूसरे दिन स्कूल के लिए तैयार होकर गए तो बच्चे चिढ़ाने लगे और मैडम अलग डाँटने लगीं।

मेरी नई दोस्त

साएबा, पाँचवीं, राजकीय प्राथमिक्रा विद्यालय, सितारगंज - 2, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

एक बार मैं अपनी नानी के घर गई थी तो वहाँ पर मेरा कोई दोस्त नहीं था। एक दिन मैंने देखा कि कुछ बच्चे खेल रहे हैं तो मैं बोली कि मुझे भी खिला लो। तो एक लड़की बोली कि नहीं खिलाएँगे। मैं एक तरफ बैठ गई और उनका खेल देखने लगी। तभी एक लड़की गिर गई। उसका बहुत खून निकल रहा था तो मैंने कहा कि चलो, इसे घर ले चलते हैं तो उस लड़की की दोस्त बोली कि नहीं घर गए तो अम्मी बहुत डाँटेंगी। कोई और सहेली भी बोली कि मेरी अम्मी भी बहुत डाँटेंगी इसलिए मैं भी अपने घर नहीं ले जाऊँगी। तो मैंने कहा कि चलो, मेरे घर चलते हैं। फिर शाम को जब उसकी चोट थोड़ा-थोड़ा ठीक हो गई तो उसने कहा कि मैं तुमसे बोलूँगी। अब हमारी दोस्ती हो गई।

बिजूका

शम्भूराज जगताप, पृथ्वीराज वर्पे,
जोया शेख, चौथी, जिला परिषद
स्कूल सांगवी, फलटण, महाराष्ट्र

बिजूका खेत में लगाए जाते हैं। घास, मटकों से बिजूका बनाते हैं। बिजूका की आँख और नाक चूने से बनती हैं। फिर उसे कपड़े पहनाए जाते हैं। हमारे खेत में फसल आती है तो बिजूका लगाते हैं। जब मैं बिजूका को देखता हूँ तो ऐसा लगता है कि वो मुझसे बातें करता है। मुझे लगता है उससे खूब खेलूँ, उससे सवाल पूछूँ, बहुत सारी बातें करूँ। मुझे उसके बाल अच्छे लगते हैं। पंछियों को लगता है कि कोई आदमी खड़ा है तो वे हमारी फसल नहीं खाते। ऐसे बिजूका खेत की रक्षा करता है। मुझे बिजूका बहुत पसन्द है।

चित्र: शम्भूराज जगताप, पृथ्वीराज वर्पे, जोया शेख चौथी, ज़िला परिषद स्कूल, सांगवी फलटण, महाराष्ट्र

चित्र: कुशाग्र मिश्रा, दूसरी, सेंट फ्रांसिस स्कूल, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

मेरा पन्ना

बिल्ली के बच्चे

सतविशा बुड़कोड़ी
दूसरी, लोहाघाट
उत्तराखण्ड

कुल तीन हैं वो बिल्ली के बच्चे। खाना तो मैं उन्हें देती हूँ, पर वो मेरे पास नहीं आते। पहले उनकी माँ मेरे पास आती थी, पर अब वो भी नहीं आती है। अब तो वो बिल्ली के बच्चे बड़े हो गए हैं। फिर भी वो मेरे पास नहीं आते। वो सब स्यालदे में हैं। स्यालदे में मेरी अम्मा का घर है। मैं मम्मी के साथ वहाँ जाती हूँ। ऐसे ही हल्द्वानी में भी एक बिल्ली है। वो मेरे पास आती है। वो मुझे खुद को छूने भी देती है। उसके भी चार बच्चे हुए हैं। मैंने उनको देखा तो नहीं है पर मेरी नानी ने फोन पर मुझे बता दिया था। मेरी नानी का घर हल्द्वानी में है। मुझे स्याहदे की बिल्लियाँ अच्छी लगती हैं और हल्द्वानी की बिल्लियाँ भी अच्छी लगती हैं, और मुझे लगता है कि उसके बच्चे भी अच्छे होंगे। मैं उनको देखने हल्द्वानी जाऊँगी।

बचपन की शरारत

रवि कुमार, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय, मोहनलालगंज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

चित्र: इलक्किया मोहनराज, दसवीं, द यलो ट्रेन स्कूल कोयम्बटूर, तमिलनाडु

चित्र: विहान बिन्दल, दूसरी 'बी', द हेरीटेज स्कूल रोहिणी, दिल्ली

मैं तेरह साल का हूँ लेकिन सात साल पहले मैं और मेरा परिवार त्रिवेणी नगर में रहते थे। जब मैं सात साल का था तो मैं बहुत शरारती था। मेरे पापा एक नर्सरी में काम करते थे। जब माँ मुझे पापा को खाना देने के लिए भेजती थीं तो मैं नर्सरी में जाता था। नर्सरी में अमरूद, अनार के पेड़ थे। पापा को खाना देने के बहाने मैं उस अमरूद के पेड़ पर चढ़ जाता था और खूब अमरूद खाता था। लेकिन एक दिन ऐसा हुआ कि मैं अमरूद के पेड़ पर चढ़ रहा था तभी अचानक मेरा पैर फिसल गया और मैं नीचे आ गिरा और मुझे चोट भी लगी। मैंने अपने घर में किसी को भी नहीं बताया कि मैं पेड़ से गिर गया हूँ। लेकिन मुझे पेड़ से गिरते एक आदमी ने देख लिया और पापा को बता दिया। पापा ने मुझे डाँटा और कहा कि अगर तुम पेड़ पर चढ़ते मिले तो तुम्हारी खैर नहीं। फिर जब माँ ने मुझे खाना देने के लिए भेजा तो रास्ते में मैंने सोचा कि आज तो पापा अमरूद के पेड़ पर चढ़ने देंगे नहीं, तो मैंने सोचा कि आज पापा से रुपए लेकर गेम खेलने जाएँगे। जब मैं पहुँचा तो पापा ने कहा कि आज पेड़ पर चढ़े तो सोच लेना। फिर मैंने पापा से कहा कि आज मैं पेड़ पर नहीं चढ़ूँगा, लेकिन आप मुझे दस रुपए दे दीजिए। पापा ने कहा कि क्या करोगे, तो मैंने कहा कि गेम खेलने जाऊँगा। पापा ने रुपए दे दिए। मैं गेम खेलने जा रहा था तो रास्ते में मेरा एक दोस्त मिल गया। वह भी मेरे साथ आ गया। हम दोनों दुकान के पास ही पहुँचे थे कि हम दोनों को कुत्ते ने रपटा लिया। फिर तो वो अपने घर की तरफ भागा और मैं अपने घर की तरफ।

इस बार हम भीमबेटका की सैर करने जा रहे हैं। यूँ तो कई रास्ते हैं पर हमें ऐसा रास्ता चुनना है जिससे कि हम चट्टान 1, 2, 3 से होते हुए चट्टान 4 तक बने सभी चित्रों को देखते हुए जा सकें। तो सफर शुरू करें?

चित्र: शर्वरी देशपाण्डे

? माथापच्ची

1. पापा इस स्वादिष्ट केक को 5 बच्चों के बीच बराबर-बराबर इस तरह बाँटना चाहते हैं कि सभी बच्चों को बीच के क्रीम वाले फूल का भाग भी बराबर-बराबर मिले। कैसे कर सकते हैं?

2. 20+20+20=60
क्या तुम 20 के अलावा किसी और संख्या को तीन बार इस्तेमाल करके 60 उत्तर ला सकते हो? (तुम जोड़, घटाव, गुणा या भाग किसी का भी इस्तेमाल कर सकते हो।)

3. एलिसा दो तस्वीरें लगाने के लिए 6 कील इस्तेमाल करती है, कुछ इस तरह। 11 तस्वीरों को लगाने के लिए उसे कम से कम कितनी कील चाहिए होंगी?

4. नीचे शब्दों के कुछ जोड़े दिए गए हैं। तुम्हें सभी जोड़ों के लिए एक ऐसा शब्द ढूँढना है जो दोनों शब्दों से किसी ना किसी तरह से जुड़ा हो, जैसे कि 'प्रश्न व दिशा' शब्दों के लिए ऐसा एक शब्द 'उत्तर' हो सकता है,

लेखक, पौधा
बाल, पहाड़
नदी, धनुष
सरकार, हाथ
खेल, आकार

5. एक आदमी तेज़ी-से आता हुआ सीधा डॉक्टर के कमरे में पहुँचा। वहाँ डॉक्टर और पुलिस आपस में बात कर रहे थे तभी वह आदमी बोला, 'मेरी बीवी को बचा लीजिए, किसी ने उसे गोली मार दी है।' डॉक्टर ने उसे कहा कि तुम पूरी घटना पुलिस को बताओ, मरीज़ को मैंने देख लिया है। उसने पुलिस को बताया कि मैं ऑफिस में था तभी हमारे नौकर का फोन आया कि मैं तुरन्त अस्पताल पहुँच जाऊँ, मेरी बीवी बहुत सीरियस है और आई. सी. यू. में है। पुलिस ने उस आदमी को कत्ल के जुर्म में गिरफ्तार कर लिया। क्यों?

	7		8	5		6		1
5	8						7	2
		1	2		7	4		
		6	3		2	5		
3			9		1			7
8		9		7		1		3
4			1		3			6
	3	7				8	9	
9		2	7	4			1	5

सुडोकू-20

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरना। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय हमें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि उन डब्बों में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

माथापच्ची जवाब

1. इस तरह बाँट सकते हैं →

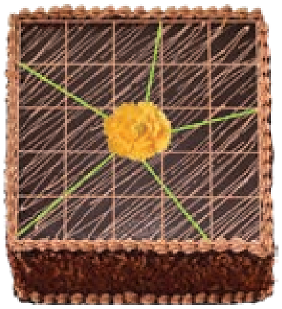

2. 60+60-60=60

3. 19 कील। →

4. कलम, चोटी, तीर, कर, गोल

5. क्योंकि उस आदमी के नौकर ने सिर्फ यह कहा था कि उसकी पत्नी सीरियस है, फिर उसे कैसे मालूम कि पत्नी को गोली लगी है।

भूलभुलैया का जवाब

भूल सुधार

पिछले अंक में,

1. पृष्ठ 19 के आखिरी चित्र के साथ लिखा है, 'आज हमारे वायुण्डल में लगभग 78% ऑक्सीजन, 21% नाइट्रोजन और... है।' यह '21% ऑक्सीजन और 78% नाइट्रोजन' होना चाहिए था।
2. पृष्ठ 37 पर, मेरा पन्ना में प्रकाशित 'पेड़' कविता दिविक रमेश की रचना है।

मई की चित्र पहेली का जवाब

चा 1	कू 2	■	कं 3	घा 4	■	पा 5	जा	मा 6
■	ल 7	स्सी	■	स 8	मो 9	सा	■	ल
बे 10	र	■	ऊँ 11	■	ग	■	बा 12	ती
ल	■	टी13	ट	ह 14	री	■	ग	■
चा15	बु 16	क	■	थ	■	पे 17	ड़	■
■	न 18	ट	■	क 19	व	च	■	कौ20
■	क	■	छ 21	ड़ी	■	क 22	बा23	ड़ी
चा24	र	को	ल	■	मू 25	स	ल	■
रा	■	■	नी	■	र्ति	■	टी26	ला

सुडोकू-19 का जवाब

7	3	1	9	8	2	4	6	5
8	2	4	6	7	5	9	3	1
5	6	9	3	4	1	7	8	2
6	1	3	4	5	9	8	2	7
4	5	2	7	6	8	1	9	3
9	8	7	2	1	3	6	5	4
2	7	8	1	3	6	5	4	9
3	4	5	8	9	7	2	1	6
1	9	6	5	2	4	3	7	8

चित्र पहेली

● बाएँ से दाएँ

■ ऊपर से नीचे

1		2	■	3		4	■	5
	■	6	7		■		■	
■	8	■	9		10	■	11	
12		13		■	14			■
	■		■	15		■	■	16
17	18		■		■	■	19	
■		■	20	■	21			■
22		■	23			■	■	24
■	■	25		■	26			

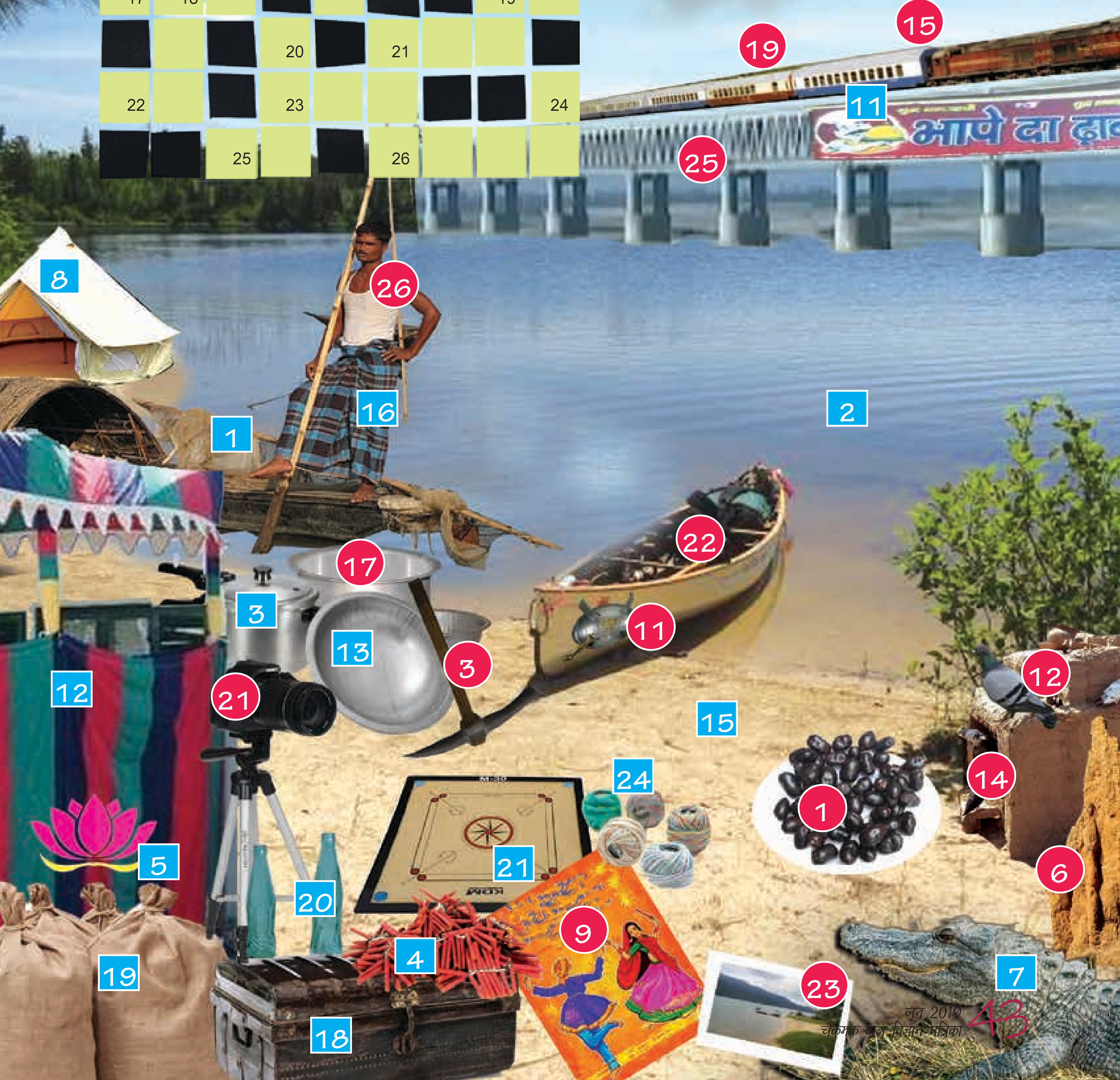

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20

आलोक कुमार मिश्रा की दो कविताएँ

चित्र:शुभम लखेरा

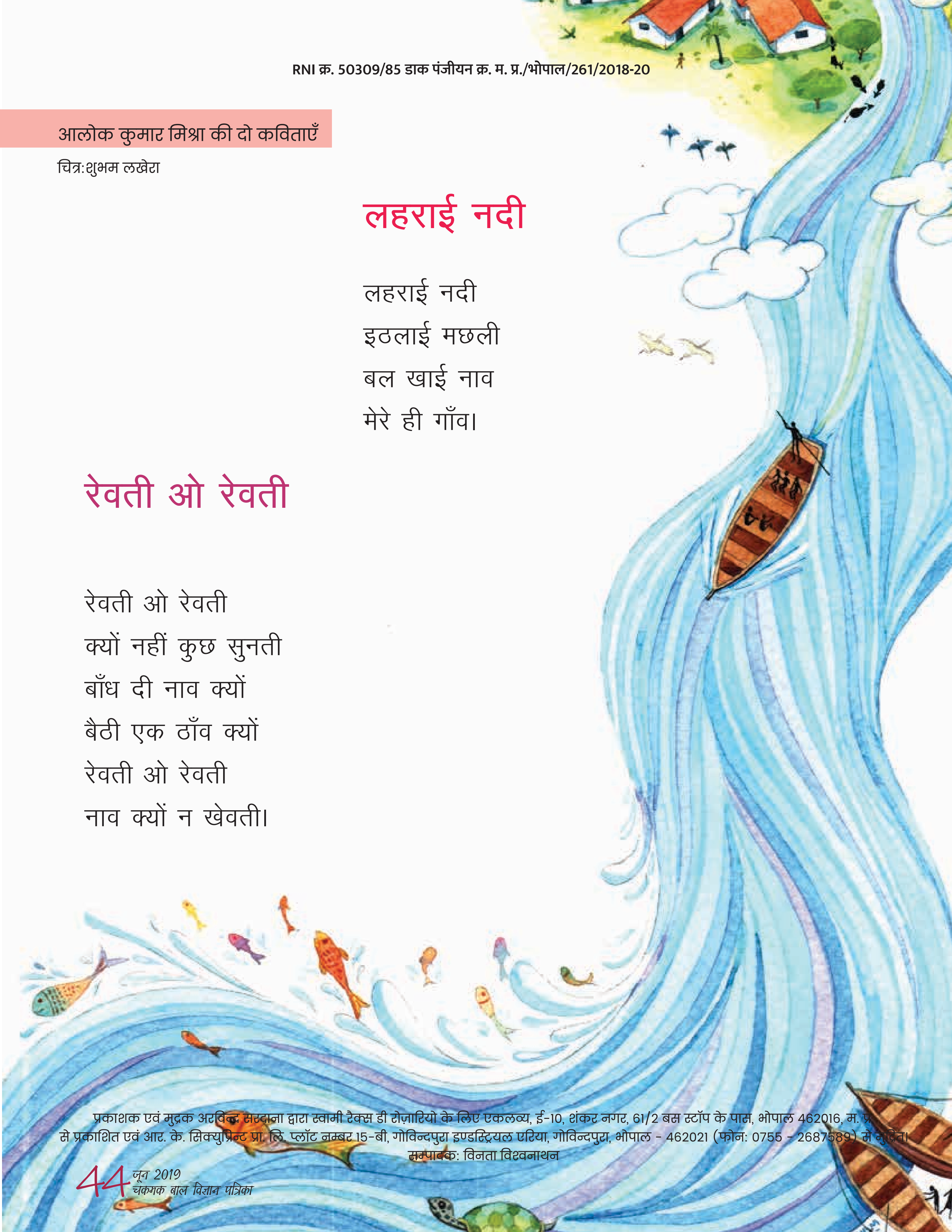

लहराई नदी

लहराई नदी
इठलाई मछली
बल खाई नाव
मेरे ही गाँव।

रेवती ओ रेवती

रेवती ओ रेवती
क्यों नहीं कुछ सुनती
बाँध दी नाव क्यों
बैठी एक ठाँव क्यों
रेवती ओ रेवती
नाव क्यों न खेवती।

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म. प्र. से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन